2035 तक तैयार होगा स्वदेशी... पेज 5

दैनिक
कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

सपने में बजरंगबली ने दिए हैं दर्शन... पेज 7

वर्ष 6, अंक 346 | भोपाल, गुरुवार 28 मई, 2026 | ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, द्वादशी 2083 | मूल्य 2 रुपए

कांप उठा मिडिल ईस्ट! हमास के नए सुप्रीम कमांडर का काम तमाम, नेतन्याहू बोले- '7 अक्टूबर के हर गुनहगार को ढूँढ ढूँढकर मारेंगे'

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

पश्चिम एशिया (मिडल ईस्ट) से इस वक्त की सबसे बड़ी और दुनिया को दहला देने वाली खबर सामने आ रही है। इज़राइल ने गाज़ा पट्टी में एक बेहद खुफिया और सर्जिकल एयरस्ट्राइक को अंजाम देते हुए हमास के सबसे बड़े और नए सैन्य कमांडर मुहम्मद ओदेह (Muhammad Odeh) को मार गिराया है। ओदेह के साथ हमास का एक और 'बड़ा ऑपरेटिव' भी इस हमले में ढेर हो गया है। यह इजराइली डिफेंस फोर्सेज (IDF) की अब तक की सबसे बड़ी खुफिया सफलताओं में से एक मानी जा रही है, क्योंकि मुहम्मद ओदेह 7 अक्टूबर, 2023 को इज़राइल में हुए भीषण नरसंहार का मुख्य मास्टरमाइंड (साज़िशकर्ता) था। इस वैश्विक घटनाक्रम के बाद पूरे मिडिल ईस्ट में तनाव सातवें आसमान पर पहुंच गया है और दुनिया भर के देशों की सांसें थम गई हैं।

इस बीच, अल जज़ीरा ने फ़िलिस्तीन रेड क्रिसेंट सोसाइटी के हवाले से बताया कि मध्य गाज़ा शहर में एक रिहायशी घर पर इज़राइली हवाई हमले में कम से कम चार फ़िलिस्तीनी मारे गए और 15 अन्य घायल हो गए।

यह घटना तब हुई जब इज़राइली वायु सेना और इज़राइल डिफ़ेंस फ़ोर्सेज़ ने गाज़ा में मुहम्मद ओदेह को मार गिराया। ओदेह आतंकवादी संगठन हमास की सैन्य शाखा का नया नेता था और 7 अक्टूबर के नरसंहार के मुख्य साज़िशकर्ताओं में से एक था।

इज़राइल के PMO ने X पर एक पोस्ट में कहा, "यह ऑपरेशन प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और रक्षा मंत्री इज़राइल काट्ज़ के निर्देशों पर किया गया।" ओदेह ने 7 अक्टूबर के नरसंहार के दौरान हमास के इंटेलिजेंस स्टाफ़ के प्रमुख के तौर पर काम किया था। उसे लगभग एक हफ़्ते पहले ही इज़्ज़ेदीन अल-हद्दाद की जगह नियुक्त किया गया था। अल-हद्दाद को दो हफ़्ते पहले गाज़ा पट्टी में IDF के एक हमले में मार गिराया गया था। ओदेह कई इज़राइली नागरिकों और IDF सैनिकों की हत्या, अपहरण और उन्हें घायल करने के लिए भी ज़िम्मेदार था।

बेंजामिन नेतन्याहू ने भी X पर एक पोस्ट में इस बात की पुष्टि की और 7 अक्टूबर, 2023 के नरसंहार में शामिल सभी लोगों को खत्म करने का संकल्प लिया। उन्होंने कहा, "हमने अब'मुहम्मद ओदेह' पर हमला किया है - जो हमास की सैन्य शाखा का नेता और 7 अक्टूबर के नरसंहार के मुख्य साज़िशकर्ताओं में से एक था। हम उन सभी तक पहुँचेंगे।" इस बीच, इज़राइल ने दावा किया कि उसने पूरे दिन लेबनान में हिज़्बुल्लाह द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली सैन्य इमारतों, कमांड सेंटरों और लॉन्च साइटों पर हमले किए। सेना ने बताया कि इस हफ़्ते की शुरुआत से अब तक इज़राइली सेना ने हिज़्बुल्लाह के 550 ठिकानों पर हमले किए हैं।

समाचार संपादक की कलम से
–राहुल कौशिक

लोकतंत्र में सरकार की समीक्षा जरूरी, लेकिन देशहित और मर्यादा भी उतनी ही महत्वपूर्ण

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यहां हर नागरिक को अपनी बात रखने, सरकार की नीतियों पर सवाल उठाने और अपनी राय व्यक्त करने का पूरा अधिकार है। किसी भी सरकार के लिए समय-समय पर समीक्षा होना लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत मानी जाती है। जनता अगर सवाल पूछना बंद कर दे, तो लोकतंत्र कमजोर होने लगता है। लेकिन इसके साथ एक और बात उतनी ही जरूरी है — आलोचना देश के अंदर लोकतांत्रिक तरीके से होनी चाहिए, न कि देश की छवि को नुकसान पहुंचाने वाले तरीके से।

आज सोशल मीडिया के दौर में हर व्यक्ति अपनी राय खुलकर रख रहा है। कई बार लोग सरकार की नीतियों से असहमत भी होते हैं। यह स्वाभाविक है। स्वयं कई ऐसे लोग हैं जिन्हें कभी-कभी लगता है कि सरकार की कुछ नीतियां बेहतर हो सकती थीं। उदाहरण के लिए "फ्री" यानी मुफ्त योजनाओं को लेकर देश में लगातार बहस होती रही है। बहुत से लोग मानते हैं कि जरूरतमंदों की मदद जरूरी है, लेकिन हर चीज मुफ्त देने की आदत देश की आर्थिक व्यवस्था पर बोझ बन सकती है।

इसका मतलब यह नहीं कि देश के प्रधानमंत्री या किसी संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति के लिए अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल किया जाए। लोकतंत्र में विरोध का अधिकार है, लेकिन मर्यादा भी उतनी ही आवश्यक है। राजनीतिक असहमति हो सकती है, लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर गिरकर टिप्पणी करना किसी भी लोकतंत्र के लिए स्वस्थ संकेत नहीं माना जाता।

आज देश में एक वर्ग ऐसा भी है जो मानता है कि सरकार ने कई क्षेत्रों में अच्छा काम किया है, लेकिन कुछ कमियां भी हैं। यह एक संतुलित सोच है। हर सरकार में कुछ अच्छे लोग होते हैं और कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जिन पर सवाल उठते हैं। यह स्थिति केवल किसी एक दल में नहीं बल्कि लगभग हर राजनीतिक व्यवस्था में देखने को मिलती है। इसलिए केवल एक व्यक्ति या एक दल को पूरी तरह सही या पूरी तरह गलत कहना भी उचित नहीं माना जा सकता।

पिछले कुछ वर्षों में पेट्रोल और डीजल की कीमतों को लेकर भी काफी चर्चा हुई। जैसे ही कुछ रुपये की बढ़ोतरी होती है, सोशल मीडिया पर सरकार के खिलाफ प्रतिक्रियाएं शुरू हो जाती हैं। लेकिन कई लोग यह सवाल भी पूछते हैं कि जब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतें कम हुई थीं या सरकार ने टैक्स कम किए थे, तब उतनी चर्चा क्यों नहीं हुई? यह भी सच है कि पेट्रोल की कीमतें केवल एक सरकार की इच्छा से तय नहीं होतीं। इसमें अंतरराष्ट्रीय बाजार, डॉलर की स्थिति, टैक्स, परिवहन लागत और कई आर्थिक कारक शामिल होते हैं।

भारत जैसे बड़े देश को चलाने के लिए सरकार को टैक्स की जरूरत होती है। सड़कें, सेना, रेलवे, एयरपोर्ट, बिजली, स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा — यह सब टैक्स से ही चलता है। ऐसे में अगर हर चीज मुफ्त देने की मांग हो और साथ में पेट्रोल भी बहुत सस्ता चाहिए, तो आर्थिक संतुलन बनाना किसी भी सरकार के लिए कठिन हो सकता है। कई टैक्स देने वाले नागरिकों का मानना है कि उन्हें देश के विकास के लिए टैक्स देने में समस्या नहीं है, लेकिन समस्या वहां होती है जहां मेहनत करने वालों और केवल मुफ्त सुविधाओं पर निर्भर रहने वालों के बीच अंतर खत्म होने लगता है।

आज समाज में एक बड़ी बहस यह भी है कि "फ्री कल्चर" यानी मुफ्त की राजनीति कहीं लोगों को आत्मनिर्भर बनने से दूर तो नहीं कर रही। अगर हर चीज मुफ्त मिलने लगे, तो कुछ लोगों में काम करने की इच्छा भी कम हो सकती है। यही कारण है कि कई अर्थशास्त्री कहते हैं कि सरकार का काम लोगों को अवसर देना होना चाहिए, केवल मुफ्त चीजें बांटना नहीं।

कुछ लोग यह भी मानते हैं कि देश में ऐसे वर्ग बढ़ते जा रहे हैं जो केवल मुफ्त सुविधाओं की उम्मीद रखते हैं और हर समस्या के लिए सरकार को दोष देते हैं। वहीं दूसरी ओर टैक्स देने वाला मध्यम वर्ग लगातार मेहनत करता है, कारोबार चलाता है और देश की अर्थव्यवस्था में योगदान देता है। ऐसे लोगों को लगता है कि अगर आर्थिक अनुशासन न हो, तो देश की स्थिति कमजोर हो सकती है।

राजनीति में आज कई नए संगठन और दल भी सामने आ रहे हैं, जो जनता की नाराजगी को अपने पक्ष में बदलने की कोशिश करते हैं। सोशल मीडिया पर कुछ पार्टियां तेजी से लोकप्रिय होती दिखाई देती हैं। लेकिन यह भी देखा गया है कि कई बार ऐसे समूह उन लोगों का समर्थन हासिल कर लेते हैं जो केवल विरोध की राजनीति करना चाहते हैं। कुछ लोग बिना किसी ठोस योजना के केवल सरकार विरोध को ही राजनीति का आधार बना लेते हैं।

भारत में चुनाव के दौरान वोट खरीदने की चर्चाएं भी समय-समय पर सामने आती रही हैं। अगर कोई व्यक्ति कुछ हजार रुपये लेकर अपना वोट बेच देता है, तो यह केवल राजनीति की नहीं बल्कि समाज की भी समस्या है। लोकतंत्र की असली ताकत जागरूक मतदाता होता है। जब वोट सोच-समझकर नहीं बल्कि लालच या भावनाओं में दिया जाता है, तब गलत लोग भी सत्ता तक पहुंच जाते हैं।

कई लोग यह मानते हैं कि अगर देश में मजबूत सरकार न हो, तो भ्रष्टाचार और लूट की स्थिति और अधिक बढ़ सकती है। भारत ने ऐसे दौर भी देखे हैं जब घोटालों और भ्रष्टाचार की खबरें लगातार सामने आती थीं। इसलिए कुछ नागरिकों को लगता है कि सख्त प्रशासन और आर्थिक अनुशासन देश के लिए जरूरी है, भले ही उसके कुछ फैसले तुरंत लोकप्रिय न लगें।

हालांकि यह भी उतना ही सच है कि किसी भी लोकतंत्र में सरकार से सवाल पूछना जनता का अधिकार है। सरकार जनता से ऊपर नहीं होती। लेकिन सवाल तथ्यों और तर्कों के आधार पर होने चाहिए, केवल गुस्से, अफवाह या सोशल मीडिया ट्रेंड के आधार पर नहीं। देशहित सबसे ऊपर होना चाहिए। भारत को आगे बढ़ाने के लिए केवल सरकार नहीं, बल्कि जनता की सोच भी जिम्मेदार है। अगर नागरिक मेहनत, ईमानदारी और जिम्मेदारी को प्राथमिकता देंगे, तो देश मजबूत होगा। लेकिन अगर समाज केवल मुफ्त सुविधाओं और तात्कालिक लाभों की राजनीति में उलझ जाएगा, तो इसका असर आने वाली पीढ़ियों पर भी पड़ेगा।

लोकतंत्र में आलोचना जरूरी है, लेकिन राष्ट्रहित और मर्यादा उससे भी ज्यादा जरूरी हैं। यही संतुलन भारत जैसे विशाल लोकतंत्र को मजबूत बनाता है।

इस्लामिक नाटो को बड़ा झटका, ग्रीस के बाद साइप्रस, भूमध्य सागर में भारत का कूटनीतिक विस्तार

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी निकोसिया

भारत और साइप्रस ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को पूर्ण रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक पहुंचा दिया है। यह ऐलान साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलाइड्स की हाल की भारत यात्रा के दौरान किया गया। इस दौरान भारत और साइप्रस के बीच पांच साल के डिफेंस रोडमैप और कई दूसरे समझौते भी हुए। इन समझौतों को पूर्वी भूमध्य सागर क्षेत्र में सुरक्षा, व्यापार और कनेक्टिविटी के मामलों में दोनों देशों के बीच बढ़ती सहमति का संकेत माना जा रहा है। यह घटनाक्रम तब हुआ है, जब पाकिस्तान, सऊदी अरब और तुर्की कई दूसरे सुन्नी देशों को साथ लेकर इस्लामिक नाटो को बनाने की पहल कर रहे हैं।

20 से 23 मई तक साइप्रस के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान कई महत्वपूर्ण घटनाक्रम हुए। हालांकि, दोनों देशों के बीच सिक्योरिटी और डिफेंस को लेकर हुई साझेदारियों की खूब चर्चा हुई। बैठक के दौरान, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति क्रिस्टोडौलाइड्स ने आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों की, जिसमें सीमा पार आतंकवाद भी शामिल है, स्पष्ट शब्दों में निंदा की। दोनों पक्षों ने अप्रैल 2025 में जम्मू और कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले और नवंबर 2025 में नई दिल्ली के लाल किले के पास हुई आतंकवादी घटना की कड़े शब्दों में निंदा की।

दोनों नेताओं ने दोनों देशों के रक्षा मंत्रालयों के बीच द्विपक्षीय रक्षा सहयोग (2026–2031) के रोडमैप के पूरा होने का स्वागत किया। यह रक्षा औद्योगिक सहयोग और प्रौद्योगिकी साझेदारी को बढ़ावा देने के लिए एक संस्थागत ढांचा प्रदान करता है, साथ ही आदान-प्रदान, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण को भी सुगम बनाता है। साइप्रस ने भारतीय प्लेटफॉर्म जैसे ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों और नागस्त्र-1 तथा स्काईस्ट्राइकर जैसे कामिकाज़े ड्रोन में गहरी रुचि व्यक्त की है। इन प्रणालियों ने 'ऑपरेशन सिंदूर' में अपने प्रदर्शन के बाद दुनिया का ध्यान आकर्षित किया था।

हालांकि, भारत और साइप्रस में हथियारों की खरीद से जुड़ी कोई डील अभी फाइनल नहीं हुई है, लेकिन इसे भविष्य के रक्षा संबंधों का रोडमैप माना जा रहा है। यह भारत की हथियारों के बाजार में खुद की पकड़ बढ़ाने की महत्वकांक्षा के भी अनुरूप है। अगर साइप्रस की रुचि वास्तविक खरीद में तब्दील होती है, तो यह पूर्वी भूमध्य सागर क्षेत्र में भारत निर्मित हथियार प्रणालियों की पहली तैनाती होगी।

तुर्की ने 1974 से उत्तरी साइप्रस पर कब्जा कर रखा है और निकोसिया के साथ समुद्री सीमाओं तथा ऊर्जा संसाधनों को लेकर उसके लगातार विवाद चल रहे हैं। तुर्की के पाकिस्तान के साथ घनिष्ठ रक्षा और राजनीतिक संबंध हैं। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भी तुर्की ने पाकिस्तान की सैन्य रूप से मदद की थी और खुलेआम समर्थन का ऐलान किया था। ऐसी भी रिपोर्ट्स हैं कि तुर्की जल्द ही पाकिस्तान-सऊदी अरब रणनीतिक आपसी रक्षा समझौते (SMDA) में शामिल हो सकता है। इसमें मिस्र को भी शामिल करने को लेकर बातचीत चल रही है।

अमेरिका ने सीधे ईरान पर किया बड़ा हमला, वैश्विक महायुद्ध की आहट!

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी वॉशिंगटन

पश्चिम एशिया (मिडल ईस्ट) में भू-राजनीतिक तनाव एक बार फिर चरम पर पहुंच गया है। अमेरिकी सेना ने रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण और संवेदनशील होर्मुज जलडमरूमध्य (Strait of Hormuz) के पास ईरानी सैन्य ठिकानों और ड्रोनों पर नए रक्षात्मक हमले किए हैं। अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार, यह कार्रवाई क्षेत्र में संभावित खतरों को नाकाम करने और अंतरराष्ट्रीय शिपिंग रूट की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए की गई है। यह इस सप्ताह के भीतर ईरान के खिलाफ अमेरिका का दूसरा बड़ा "रक्षात्मक हमला" है, जिसने वाशिंगटन और तेहरान के बीच चल रहे राजनयिक प्रयासों के बीच युद्ध की आशंकाओं को गहरा कर दिया है। अधिकारियों ने कहा कि अमेरिकी सेना ने बंदर अब्बास में एक ईरानी ग्राउंड कंट्रोल स्टेशन को भी निशाना बनाया, जो कथित तौर पर पांचवां ड्रोन लॉन्च करने की तैयारी कर रहा था। अधिकारियों ने नाम न छापने की शर्त पर समाचार एजेंसी एसोसिएटेड प्रेस से बात की क्योंकि वे इस मामले पर सार्वजनिक रूप से टिप्पणी करने के लिए अधिकृत नहीं थे।

नवीनतम सैन्य कार्रवाई इस सप्ताह ईरान के खिलाफ दूसरा अमेरिकी "रक्षात्मक हमला" है और यह वाशिंगटन और तेहरान के बीच चल रहे राजनयिक प्रयासों के बावजूद बढ़ते तनाव के बीच आया है। ये हमले तब हुए जब राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस बात पर जोर दिया कि ईरान "धूम्रपान पर बातचीत" कर रहा है और इस बात पर जोर दिया कि नवंबर के मध्यावधि चुनाव उन्हें लगभग तीन महीने पुराने संघर्ष को समाप्त करने के लिए समझौते में जल्दबाजी नहीं करने देंगे, जिसने वैश्विक अर्थव्यवस्था में बेचैनी पैदा कर दी है। कैबिनेट बैठक के दौरान बोलते हुए ट्रंप ने भरोसा जताया कि ईरान के साथ समझौता करीबी हो सकता है। सप्ताहांत में, उन्होंने दावा किया था कि वाशिंगटन और तेहरान ने एक समझौते पर "बड़े पैमाने पर बातचीत" की थी, हालांकि अधिकारियों ने संकेत दिया कि चर्चाएं अस्थिर और अनसुलझी बनी हुई हैं। उन्होंने ईरान की अर्थव्यवस्था की गंभीर तस्वीर पेश करते हुए कहा कि देश "मुक्त गिरावट" में है, उन्होंने आरोप लगाया कि मुद्रास्फीति 250 प्रतिशत तक बढ़ गई है और दावा किया कि ईरानी मुद्रा ने प्रभावी रूप से अपना मूल्य खो दिया है। उन्होंने कहा, "उनकी पूरी आर्थिक व्यवस्था चरमरा गई है।" तेहरान की परमाणु महत्वाकांक्षाओं पर अपनी लंबे समय से चली आ रही स्थिति को दोहराते हुए, ट्रम्प ने घोषणा की कि ईरान के पास "परमाणु हथियार नहीं हो सकता," उन्होंने आगे कहा, "वे इसका तुरंत उपयोग करेंगे।

साधारण घटना को असाधारण ढंग से प्रस्तुत करने का कौशल है लघुकथा –सुनीता प्रकाश

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

'लघुकथा सृजन में गहरी संवेदना होती है यह साधारण घटना को आसाधारण ढंग से प्रस्तुत करने का कौशल है आज श्रीमती नीता सैनी द्वारा प्रस्तुत लघुकथाओं में आम भारतीय परिवारों की व्यथा, स्त्री मन की पीड़ा, बुजुर्गों की उपेक्षा ग़रीबी का संघर्ष पूरे तेवर के साथ उभरकर सामने आता है । '

यह उदगार हैं वरिष्ठ लघुकथाकार और समीक्षक श्रीमती सुनीता प्रकाश के जो लघुकथा शोध केंद्र समिति भोपाल द्वारा आयोजित साप्ताहिक ऑन लाइन बुधवारीय लघुकथा गोष्ठी एवं विमर्श के आयोजन में लघुकथाकार श्रीमती नीता सैनी, दिल्ली द्वारा प्रस्तुत की गई लघुकथाओं पर मुख्य समीक्षक के रूप में बोल रही थी । कार्यकम का शुभारम्भ घनश्याम मैथिल अमृत सचिव लघुकथा शोध केंद्र के स्वागत उदबोधन से हुआ, अश्विनी देशपांडे के सुमधुर संचालन में लघुकथा गोष्ठी आरम्भ हुई और लेखिका ने स्किन एलर्जी, फादर्स डे, बाबा की थकावट, मां का बरसाती वाला कमरा, मुस्कुराहट वाली चादर लघुकथाओं का प्रभावी पाठ किया, इन लघुकथाओं पर अपराजिता शर्मा, कांता रॉय, अनिल कुमार, अंजनागर्ग, डॉ. आदर्श प्रकाश, पूर्णिमा बर्मन ने अपनी महत्वपूर्ण टिप्पणीयां प्रस्तुत कर आयोजन को सार्थक ऊंचाई प्रदान की, कार्यक्रम में देश और दुनिया के अनेक साहित्यकार उपस्थित थे कार्यक्रम के अंत में लेखिका ने सभी का आभार व्यक्त किया ।

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा इंदौर संभाग द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन इन्दौर में आयोजित किया गया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा इंदौर संभाग द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन इन्दौर में गत दिवस आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सर्व प्रथम भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा के झंडा का झण्डा बंधन अध्यक्ष उमेश नन्द लाल शाहू द्वारा किया गया एवं मां कर्मा देवी जी की पूजा अर्चना की गई एवं प्रथम पूज्य भगवान श्री गणेश की वंदना से कार्य क्रम प्रारंभ किया गया तत्पश्चात महिला सशक्तिकरण पर संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ रेखा साहू एवं सदस्यों द्वारा नाटिका प्रस्तुति करण दी गई जिसमें महिलाओं के सात अलग अलग रूपों के बारे में बताया गया एवं प्रस्तुति दी गई।

कार्य क्रम में सम्पूर्ण राष्ट्र से आए राष्ट्रीय पदाधिकारियों एवं प्रदेश अध्यक्ष गण का सम्मान किया गया एवं विधान सभा क्र- 04 की विधायक मालिनी गौड़ , इंदौर शहर के महापौर पुष्यमित्र भार्गव , स्वाती काशिव भाजपा नगर मंत्री का सम्मान मंच से किया गया।*

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए कोर कमेटी के सदस्यों में चन्द्र मोहन साहू भोपाल राष्ट्रीय अपर महामंत्री (संगठन कार्य प्रमुख) , अशोक जानकी लाल साहू इंदौर,राष्ट्रीय प्रभारी व्यापारी एवं उद्योग प्रकोष्ठ, प्रकाश साहू (पीथमपुर) राष्ट्रीय समनवयक उद्योग एवं व्यापारी प्रकोष्ठ, राधे श्याम साहू जुलवानिया राष्ट्रीय उपाध्यक्ष उद्योग एवं व्यापारी प्रकोष्ठ , ललिता साहू राष्ट्रीय कार्य बाहक अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ इंदौर , वैजन्ती साहू धार राष्ट्रीय उपाध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ, रेखा साहू इंदौर, प्रदेश अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ मध्य प्रदेश, जितेन्द्र साहू धार , युवा प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष मध्य प्रदेश, प्रतीक साहू इंदौर युवा प्रकोष्ठ संभागीय अध्यक्ष , गौरव साहू इंदौर युवा प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष इंदौर द्वारा अथक प्रयास किए गए।*

कार्यक्रम में भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा के संरक्षक (पूर्व अध्यक्ष तेल घानी बोर्ड मध्य प्रदेश) रवि करण साहू द्वारा कहा गया कि तेल घानी बोर्ड के गठन की बात तो बाद में की जाएगी पहले हमारे समाज के विधायक एवं सांसद को मंत्री बनाए जाय एवं समाज के समाज सेवी जनों को शासन एवं संगठन में उचित प्रति निधित्व मिले एवं समाज जनों द्वारा प्रति माह की 11 तारीख को मां कर्मा देवी जी जयंती मनाई जाय सभी समाज जन एकत्रित हो एवं समाज की एकता दिखे।*

संरक्षक लालजी गुप्ता मुंबई द्वारा समाज की एकता पर जोर दिया , राष्ट्रीय मुख्य महामंत्री सुनील भाई साहू अमरावती द्वारा संगठन के विस्तार पर जोर दिया एवं जो दायित्व आपको मिला कि उसके अनुसार अपना कार्य करे एवं संगठन को कम से कम दो घंटा प्रति दिन दे।*

संघठन के राष्ट्रीय कार्य बाहक अध्यक्ष मेवा लाल साहू ग्वालियर द्वारा समाज के आज से सौ वर्ष पूर्व कहा बैठक कर कार्यों की शुरुआत हुई थी उनके द्वारा बताया गया कि विभिन्न नामों से साहू तेली समाज की भारत में 742 उपनाम है इसी प्रकार अफगानिस्तान में भी 42 उपनाम है , तिब्बत 02 ,पाकिस्तान भूटान , नेपाल अन्य देशों में भी हमारी समाज के लोग है।*

राष्ट्रीय सचिव राजनैतिक प्रकोष्ठ ओंकार साहू द्वारा कहा गया कि मंच की कुछ मर्यादा होना चाहिए अनावश्यक भीड़ मंच पर नहीं हो एवं संगठन की बैठक समय पर हो एवं कार्यक्रम तय कर सामाजिक दौरे कर संगठन को मजबूत किया जाए। कार्यक्रम में संगठन के अनेक वक्ताओं ने संबोधित किया जिसमें एस पी गुप्ता राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष मुंबई , नरेन्द्र साहू राष्ट्रीय उपाध्यक्ष छिंदवाड़ा, प्रभात साहू राष्ट्रीय मिडिया प्रभारी बिलासपुर, रमेश साहू महासमुंद छत्तीसगढ़, रमेश पिसे प्रोफेसर नागपुर , रति लाल गुप्ता प्रदेश अध्यक्ष, महाराष्ट्र, राम राठौर मुरेना , प्रदेश कार्य बाहक अध्यक्ष मध्य प्रदेश, मंजू कार्यमोरे राष्ट्रीय महामंत्री नागपुर , जे पी साहू इंदौर , प्रदेश महामंत्री नमो नमो मोर्चा मध्य प्रदेश, कु रानू साहू ब्यावरा राष्ट्रीय (सचिव मिडिया) महिला प्रकोष्ठ डॉ नीता साहू राष्ट्रीय कार्य बाहक अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ प्रयागराज, एवं अन्य बहुत से वक्तायो ने समाज एवं संगठन के सशक्तिकरण एवं विस्तार हेतु अपने विचार रखें।*

कार्यक्रम में ललित राठौर रुद्रपुर प्रदेश अध्यक्ष उत्तराखंड , राजेंद्र साहू जी पत्रकार जबलपुर राष्ट्रीय सलाहकार, उद्धव प्रसाद साहू कटनी राष्ट्रीय सलाहकार , अशोक साहू ग्वालियर राष्ट्रीय कार्य कारणी सदस्य, रघुवीर साहू कविराज ललितपुर सांस्कृतिक सामाजिक प्रकोष्ठ प्रमुख , जमना प्रसाद साहू दतिया,राष्ट्रीय कार्य कारणी सदस्य राष्ट्रीय सचिव मीडिया प्रकोष्ठ मोहन साहू भोपाल , राज लक्ष्मी बात्रा उदयपुर राजस्थान, राजेश आजाद राठौर इंदौर, कुन्दन लाल गुप्ता साहू हजारीबाग झारखंड , लता साहू बलौदा बाजार छत्तीसगढ़, अर्जुन सिंह साहू संगठन सचिव भोपाल , बी सी साहू सचिव भोपाल वर्षा वैभव साहू जबलपुर राष्ट्रीय महामंत्री महिला प्रकोष्ठ , अनिता साहू इंदौर प्रदेश मीडिया प्रकोष्ठ प्रभारी महिला प्रकोष्ठ, युवा प्रकोष्ठ राष्ट्रीय महामंत्री हरीश साहू छिंदवाड़ा ,युवा प्रकोष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ओम प्रकाश साहू बकतरा , युवा प्रकोष्ठ राष्ट्रीय सचिव योगेश साहू भोपाल, रूपेश साहू जिला सचिव इन्दौर , सुनीता साहू जिला उपाध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ छिंदवाड़ा, संगीता साहू जिला अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ जबलपुर , शारदा लक्ष्मी नारायण साहू प्रदेश उपाध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ छिंदवाड़ा, पूनम छोटे लाल साहू प्रदेश कोषाध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ वडवानी, प्रभात किरण साहू भोपाल, रंजना साहू भोपाल , पुष्पा साहू , पिंकी मोदी (सभी भोपाल) कन्हैया साहू हैदराबाद, आलोक गुप्ता लखनऊ, एवं अनेक कार्य कर्ता गण उपस्थित रहे।मंच संचालन चन्द्र मोहन साहू भोपाल राष्ट्रीय अपर महामंत्री संगठन कार्य प्रमुख एवं हरीश साहू छिंदवाड़ा द्वारा किया गया एवं आभार व्यक्त श्री मति ललिता साहू इन्दौर राष्ट्रीय कार्य बाहक अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ द्वारा किया गया।

हेम्टू इंटक ने पंडित जवाहर लाल नेहरू को किया याद

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

पिपलानी स्थित इंटक कार्यालय के बुद्ध सभागार में आधुनिक भारत के शिल्पकार देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी की पुण्य तिथि पर पुष्प अर्पित कर सादर नमन किया गया।

इस मौके पर हेम्टू इंटक अध्यक्ष राजेश शुक्ला ने कहा कि पंडित नेहरू को एक दूरदर्शी व्यक्ति के रूप में याद किया जाता है उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन स्वतंत्रता आंदोलन लोकतंत्र की स्थापना, धर्मनिरपेक्षता और संविधान की नींव रखते हुए भारत निर्माण के लिए समर्पित किया। देश को आर्थिक रूप से समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाने के लिए नेहरू जी ने पब्लिक सेक्टर कारखानो का निर्माण ,कृषि को बढ़ावा देने के लिए बांध का निर्माण, शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आईआईटी जैसे संस्थानों का निर्माण करवाया। पंडित नेहरू जी का भारत के लिए योगदान अविस्मरणीय है वो एक प्रखर बुद्धिजीवी आधुनिक भारत के निर्माता एवं एक सच्चे देशभक्त थे।

उनके मूल्य सदैव हम सबका मार्गदर्शन करते रहेगे।

इंटक के मीडिया प्रभारी सी आर नामदेव ने सभा में उपस्थित कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर इंटक अध्यक्ष राजेश शुक्ला यूनियन के कोषाध्यक्ष मिथलेश तिवारी, मीडिया प्रभारी सी आर नामदेव, फजल खान, प्रदीप मालवीया, नीरज विश्वकर्मा, संतोष दास, तरुणेंद्र तिवारी, एवं अन्य कई पदाधिकारी उपस्थित हुए।

ट्विशा केस- रिटायर्ड जज गिरिबाला जमानत रद्द, CBI कर सकती है गिरफ्तार

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल के चर्चित ट्विशा शर्मा मौत मामले में, मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने रिटायर्ड जज गिरिबाला सिंह की अग्रिम जमानत रद्द कर दी है। हाईकोर्ट ने देर रात 17 पन्नों का आदेश जारी किया है। कोर्ट ने कहा- मामले की गंभीरता, सबूत और जांच की स्थिति को देखते हुए आरोपी पक्ष को राहत देना उचित नहीं था। हाईकोर्ट ने ट्रायल कोर्ट की कार्यप्रणाली पर भी गंभीर सवाल उठाए। कोर्ट ने कहा कि निचली अदालत ने केस डायरी और साक्ष्यों का सही तरीके से परीक्षण नहीं किया। मृतक के शरीर पर चोटों के कई निशान थे, जिनका संतोषजनक जवाब आरोपी पक्ष नहीं दे सका। सरकार की ओर से महाधिवक्ता (AG) प्रशांत सिंह, ट्विशा के पिता की ओर से वकील सिद्धार्थ लूथरा और गिरिबाला सिंह की तरफ से वरिष्ठ वकील नित्या ने दलीलें रखी। सभी पक्षों को सुनने के बाद हाईकोर्ट ने फैसला सुनाया है। अब CBI गिरिबाला को कभी भी गिरफ्तार कर सकती है। मामले में आरोपी बनाए गए पति समर्थ सिंह को अदालत में पेश करने के बाद सीबीआई ने अपनी हिरासत में ले लिया है। कोर्ट ने उसे 29 मई तक सीबीआई रिमांड पर भेजा है। इसके बाद एजेंसी उससे लगातार पूछताछ कर रही है।

पद्मिनी एकादशी पर दादाजी धाम मंदिर में विशेष धार्मिक आयोजन

भगवान श्री हरि विष्णु पूजन, भजन-कीर्तन एवं सामूहिक विष्णु सहस्रनाम पाठ आयोजित

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जागृत एवं दर्शनीय तीर्थ स्थल दादाजी धाम मंदिर, रायसेन रोड, पटेल नगर, भोपाल में अधिकमास की पावन पद्मिनी एकादशी पर विशेष धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रम श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ आयोजित किए गए। मंदिर में भगवान श्री हरि विष्णु, श्री विठ्ठल भगवान एवं दादाजी गुरुदेव का विशेष पूजन-अर्चन, पुष्प श्रृंगार, सामूहिक विष्णु सहस्त्रनाम पाठ, भजन-कीर्तन एवं आरती संपन्न हुई। श्रद्धालुओं ने एकादशी व्रत रखकर सुख-समृद्धि, परिवार कल्याण एवं आध्यात्मिक उन्नति की कामना की। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार पद्मिनी एकादशी अधिकमास में आने वाली अत्यंत दुर्लभ एवं पुण्यदायी एकादशी मानी जाती है, जिसका व्रत एवं पूजन विशेष फलदायी माना गया है।

मंदिर समिति द्वारा प्रसादी एवं श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु विशेष व्यवस्थाएं की गईं। दादाजी धाम मंदिर परिवार ने सभी श्रद्धालुओं को पद्मिनी एकादशी की शुभकामनाएं देते हुए विश्व शांति, समाज कल्याण एवं मानवता के मंगल की प्रार्थना की।

हीटवेव चलने की चेतावनी, निवाड़ी-टीकमगढ़, छतरपुर-पन्ना में लू चलने का रेड अलर्ट

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

अबकी बार नौतपा में भीषण गर्मी के साथ आंधी और बारिश का दौर भी चल रहा है। बीते 3 दिन से कई जिलों में पानी गिरा है। चौथे दिन, गुरुवार को भी हीटवेव (लू), तेज गर्मी और आंधी-बारिश का अनुमान है। छतरपुर के 2 शहर खजुराहो और नौगांव 10 दिन से प्रदेश के सबसे गर्म शहर है। गुरुवार को भी यहां तीव्र लू का रेड अलर्ट है। मौसम केंद्र भोपाल की माने तो 18 मई से ही खजुराहो-नौगांव सबसे गर्म बने हुए हैं। इस अवधि में यहां अधिकतम तापमान रिकॉर्ड 47 डिग्री के पार पहुंच चुका है। बुधवार को दोनों ही शहरों में पारा 46.6 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया।

नौतपा में भारत के कई शहरों में टेम्परेचर 45C के पार चला गया है। तेज धूप के साथ चलने वाली गर्म हवाओं से लू यानी हीटस्ट्रोक का रिस्क बढ़ गया है। समय पर इलाज न मिले तो यह स्थिति जानलेवा हो सकती है। रूटीन में कुछ जरूरी बदलाव करके लू के रिस्क से काफी हद तक बचा जा सकता है।

मौसम विभाग ने अगले 4 दिन तक मौसम का फोरकास्ट जारी किया है। इनमें 29, 30 और 31 मई को कई जिलों में बारिश का अनुमान जताया है। वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) की वजह से ऐसा मौसम रहेगा। भोपाल में पिछले 14 साल में 7 बार नौतपा के दौरान बारिश दर्ज हुई, जबकि 2 बार सिर्फ बूंदाबांदी हुई थी। इस बार शुरुआत में ही बूंदाबांदी हो गई है। 2018 और 2019 में सबसे ज्यादा तपिश रही, जब औसत तापमान 43 से ऊपर पहुंचा था। बुधवार को प्रदेश के अधिकांश हिस्से में भीषण गर्मी पड़ी।

खजुराहो-नौगांव में अधिकतम तापमान 46.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। दतिया प्रदेश का तीसरा सबसे गर्म शहर दर्ज किया गया। यहां पारा 45.7 डिग्री सेल्सियस रहा।

रीवा में 45.4 डिग्री, दमोह में 45.2 डिग्री, राजगढ़-टीकमगढ़ में 45 डिग्री, सतना में 44.9 डिग्री, मंडला, नरसिंहपुर-श्योपुर में 44.6 डिग्री, सागर-रायसेन में 44.4 डिग्री, मलाजखंड में 44.2 डिग्री और गुना में 44 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

प्रदेश के 5 बड़े शहरों की बात करें तो ग्वालियर में सबसे ज्यादा 44.5 डिग्री, जबलपुर में 43 डिग्री, भोपाल में 43.6 डिग्री, इंदौर में 40.4 डिग्री और उज्जैन में 41.8 डिग्री रहा।

मौसम विभाग ने गुरुवार को कुल 46 जिलों में गर्म हवा चलने और भीषण गर्मी पड़ने की चेतावनी जारी की है। छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला और डिंडौरी ऐसे जिले हैं, जहां दोपहर में तो तेज गर्मी पड़ेगी, लेकिन शाम को बारिश हो सकती है।

भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन में भी तेज गर्मी रहेगी। इंदौर, धार, बड़वानी, झाबुआ, आलीराजपुर, देवास, हरदा, नर्मदापुरम और बैतूल में लू से राहत मिलेगी।

गतांक से आगे : लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

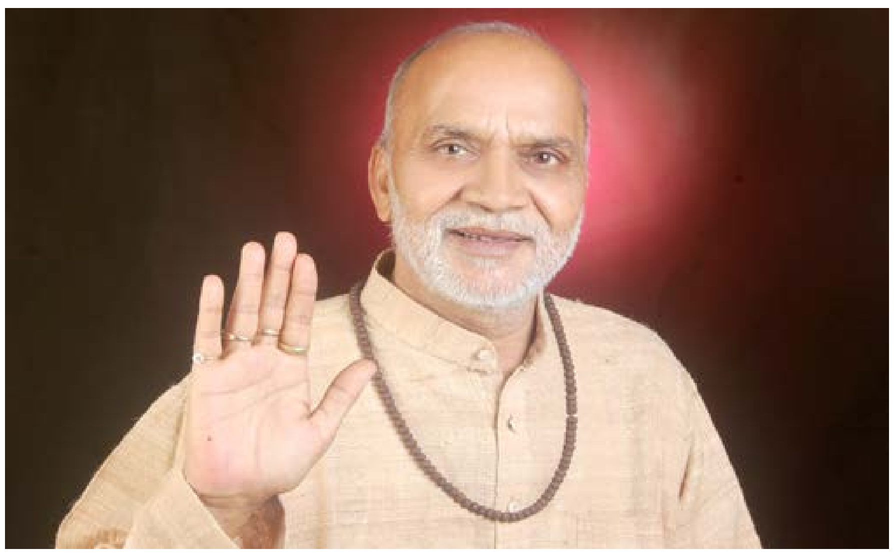

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

दादाजी गुरुदेव अपने भक्तों के दुःख, कष्ट और संकट को केवल सुनते ही नहीं थे, बल्कि उसे स्वयं अनुभव कर भक्तों के जीवन से दूर करने का दिव्य प्रयास करते थे। उनके श्रीचरणों में जो भी श्रद्धा, विश्वास और सच्चे मन से प्रार्थना लेकर पहुंचता, उसकी सहायता हेतु किसी न किसी माध्यम को तत्काल भेज दिया जाता था।

अनेक बार ऐसा प्रतीत होता था मानो दादाजी को भक्तों की पीड़ा पहले से ही ज्ञात हो। वे भक्त की परेशानी को अपने सामने घटित कर उसी क्षण उसका समाधान कर देते थे। दादाजी गुरुदेव की कृपा अनंत और अद्भुत थी। उनके लिए दूरी कभी बाधा नहीं बनी। जो भक्त किसी कारणवश उनके पास नहीं पहुंच पाता था, उसकी करुण पुकार सुनकर दादाजी स्वयं उसकी सहायता हेतु पहुंच जाते थे। भक्तों का दृढ़ विश्वास था कि दादाजी केवल एक संत नहीं, बल्कि लोककल्याण के लिए अवतरित दिव्य शक्ति थे, जो हर क्षण अपने भक्तों की रक्षा करती थीं।

ऐसी ही एक अलौकिक घटना जबलपुर में घटित हुई। एक परिवार अत्यंत गंभीर संकट से गुजर रहा था। घर में अचानक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हुई कि सभी लोग भय और चिंता से व्याकुल हो उठे। अनेक प्रयासों के बाद भी कोई मार्ग दिखाई नहीं दे रहा था। परिवार के एक सदस्य ने श्रद्धा और विश्वास के साथ दादाजी गुरुदेव का स्मरण किया और मन ही मन प्रार्थना की दादाजी, अब आपकी कृपा के अतिरिक्त कोई सहारा नहीं है। कहा जाता है कि सच्चे हृदय से निकली पुकार सीधे गुरुचरणों तक पहुंचती है। उसी रात परिवार के एक सदस्य को स्वप्न में दादाजी गुरुदेव के दिव्य दर्शन हुए। दादाजी ने अत्यंत करुणामयी स्वर में आश्वासन दिया कि भय करने की आवश्यकता नहीं, सब कुछ शीघ्र ही मंगलमय होगा। प्रातःकाल से ही परिस्थितियों में आश्चर्यजनक परिवर्तन प्रारंभ हो गया। जो कार्य असंभव प्रतीत हो रहा था, वह सहज रूप से पूर्ण होने लगा। संकट धीरे-धीरे समाप्त हो गया और पूरा परिवार दादाजी की असीम कृपा का अनुभव करने लगा। जब बाद में यह घटना श्रद्धालुओं के बीच चर्चा का विषय बनी, तब सभी ने एक स्वर में कहा कि दादाजी गुरुदेव अपने भक्तों को कभी अकेला नहीं छोड़ते। वे हर समय अपने भक्तों की रक्षा करते हैं और उचित समय पर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

दादाजी गुरुदेव का सम्पूर्ण जीवन मानव सेवा, धर्म, करुणा और लोककल्याण को समर्पित था। उन्होंने सदैव यही संदेश दिया कि श्रद्धा, विश्वास और सत्कर्म से जीवन के बड़े से बड़े संकट का समाधान संभव है। जो भक्त सच्चे मन से गुरु का स्मरण करता है, उसके जीवन में आशा, साहस और सकारात्मक ऊर्जा का संचार अवश्य होता है।

खून पसीने से सींची बगिया के उजड़नें पर पर्यावरण प्रेमी भेल अधिकारी और उनकी पत्नी रेलवे अधिकारी का पत्र

एक पाती प्रकृति (बगिया) के नाम

आज से पन्द्रह वर्ष पहले हमने बड़े प्रेम और लगन से एक छोटा सा बगीचा बनाया था। वह केवल मिट्टी में उगे पेड़ पौधों का समूह नहीं था, बल्कि हमारी भावनाओं, अपनों और प्रकृति प्रेम का जीवंत संसार था। उस बगीचे में रंग बिरंगे फूल खिलने के साथ साथ तरह-तरह के पेड़ अपनी छाया बिखेरते थे जिसमें चिड़ियों के लिए दाना पानी की व्यवस्था रहती थी। सुबह होते ही पक्षियों की मधुर चहचहाहट पूरे वातावरण को संगीत से भर देती थी। वह स्थान हमारे लिए ही नहीं बल्कि उन सभी प्रकृति प्रेमी के लिए सुकून और अपनापन का प्रतीक बन गया था। आज उस बगीचे में जाते समय कदम रूक गए आंखें उस मिट्टी में फिर वही पुराना बगीचा खोजने लगती है जिसे हमने पन्द्रह वर्ष की अथक मेहनत से सींचा था।

समय के साथ-साथ बगीचा केवल स्थान ही नहीं बल्कि परिवार का सदस्य भी बन गया था। गर्मियों में पेड़ों की ठंडी छाव, बरसात में मिट्टी की सौंधी खुशबू और सर्दियों की धूप में खिले फूल मन को आनंदित कर देते थे। बगीचे ने हमको कई संस्थाओं से पुरस्कार और नगर निगम से सम्मान दिलाया। एक नई पहचान पर्यावरण प्रेमी के रूप में दिलाई। नगर निगम ने स्वच्छता एम्बेसेडर बनाया जहाँ पर्यावरण की बात होती है वहां गुप्ता दंपती को याद जरूर किया जाता है। समय समय पर बगीचे का विजिट करने शासन के मंत्री व कई विशिष्ट हस्तियों का आगमन हुआ जिससे हमारा मनोबल और उत्साह बढ़ता गया। हम बगीचे को दिलों जान से सींचने लगे। सच है अनंत भावना से बंजर और उजाड़ जमीन को हम नई नवेली दुल्हन की तरह सजा कर रखते थे। लेकिन आज विकास की दौड़ में वही बगीचा उजाड़ कर वहां सड़क और पुल का निर्माण हो रहा है। आधुनिक विकास निश्चित रूप से आवश्यक है, क्योंकि सड़क और पूल लोगों की सुविधाओं और प्रगति के लिए जरूरी है, परंतु जब बुलडोजर से पेड़ों को गिराया और फूलों की क्यारियों को मिट्टी में मिला दिया गया तब ऐसा लगा मानो हमारी वर्षों की मेहनत और भावनाओं को भी कुचल दिया गया हो।

सबसे अधिक पीड़ा उन चिड़ियों एवं गिलहरियों को देखकर हुई जो प्रतिदिन वहां आती थीं। अब वह इधर-उधर भटक रहीं हैं जैसे अपना घरोंदा, अपना घर खोज रही हो जिन शाखाओं पर बैठकर गाती थी वे अब नहीं रहीं। प्रकृति का अयोध्या बायपास का सुंदर कोना जो कभी महकता रहता था आज वीरान सा हो गया है। यह केवल एक बगीचे का उजड़ना नहीं है, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बीच के भावनात्मक संबंध का टूटना भी है।

विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखना आज सबसे बड़ी आवश्यकता है। हरियाली खत्म हो जाएगी तो आने वाली पीढ़ियां केवल किताबों और बगीचों में ही प्रकृति की सुंदरता देख पाएंगे। पेड़ सिर्फ लकड़ी नहीं होते, जीवन की सांसे होते हैं। बगीचे केवल जमीन नहीं होते वे इंसान के दिलों में बसने वाले सपने होते हैं। आज इस उजड़े बगीचे को जब देख रहे है तो पुरानी यादें घूम रही हैं जिसने भी बगीचे की सुंदरता को निहारा है आज उसे भी बहुत पीड़ा हो रही है। शहर की तमाम सखशियतों ने बगीचे की सराहना की है वह बगीचा भले ही मिट गया उससे जुड़ी यादें और भावनाएं अभी भी जीवित हैं। आज उस प्रकृति को पाती लिखते समय मेरे हाथ कांप रहे हैं। हृदय और मन रूदन कर रहा है कि हे प्रकृति हर एक पत्ता, फूल हम हृदय से तुझसे क्षमा मांगते हैं हमें माफ करना हमारे हिस्से में बस इतनी ही सेवा लिखी थी।

- करूण दंपत्ति का करूणा हृदय
सीमा - गुरूदास गुप्ता

पहले

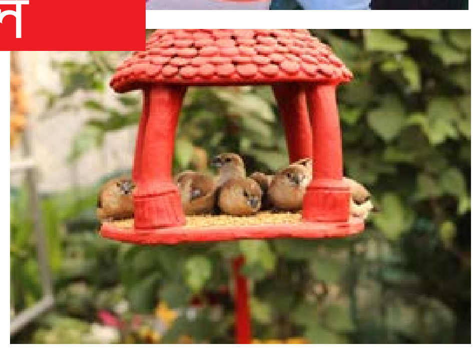

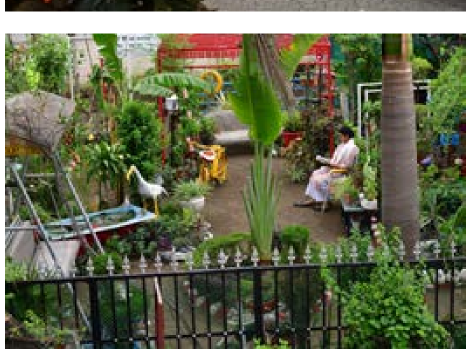

अब

गायत्री प्रज्ञापीठ बरखेड़ा में शुरू हुआ प्रतिभा जागरण शिविर, जिले भर में मनाया जा रहा व्यसनमुक्ति सप्ताह।

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

गायत्री परिवार ट्रस्ट बरखेड़ा के तत्वावधान में नौनिहालों का भविष्य संवारने हेतु आयोजित 05 दिवसीय प्रतिभा जागरण शिविर का शुभारंभ अखिल विश्व गायत्री परिवार उपजोन भोपाल के समन्वयक श्री आर. पी. हजारी एवं जिला समन्वयक श्री रमेश नागर द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया।

इस अवसर पर श्री हजारी एवं श्री नागर ने शिविर आयोजन टीम को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बच्चों की नैतिक शिक्षा एवं उनके अंदर छिपी प्रतिभाओं को निखारने के लिए किए जा रहे ऐसे प्रयास देश के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करते हैं। उन्होंने कहा कि यही बच्चे संस्कृति और समाज के भावी कर्णधार हैं।

प्रज्ञा पीठ के श्री अनिल कच्छावा शिविर प्रभारी ने बताया कि दिनांक 31 मई तक प्रतिदिन प्रातः 09 बजे से शाम 04 बजे तक चलने वाले इस शिविर में लगभग 140 बच्चे भाग ले रहे हैं।

शिविर में विषय विशेषज्ञों द्वारा बच्चों को कला के विविध आयामों के साथ-साथ नैतिक शिक्षा, योग प्राणायाम एवं संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

शिविर आयोजन में श्री शिवनारायण राजपूत ट्रस्टी, श्री हरीश कछावा, श्री रवि मालवीय, श्री मुकेश साहू, श्री जे.पी. संकड़िया, श्री भावेश शर्मा, श्रीमती सरला शर्मा, प्रियंका एवं मधु शर्मा की विशेष भूमिका है।

*दूसरी ओर 24 मई से प्रारंभ हुए व्यसन मुक्ति सप्ताह गायत्री परिवार भोपाल के अनुशासन एवं शांतिकुंज हरिद्वार के मार्गदर्शन में आयोजित, व्यसन मुक्ति अभियान प्रभारी श्री पंकज घोड़की ने जानकारी देते हुए बताया कि भोपाल जिले के प्रत्येक चेतना केंद्र पर 24 मई से व्यसन मुक्ति सप्ताह मनाया जा रहा है। इसका समापन 31 मई विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर जिला स्तरीय आयोजन मंदाकिनी कोलार भोपाल क्षेत्र में सायं 6:00 बजे से आयोजित विशाल व्यसन मुक्ति जनजागरण रैली, नुक्कड़ नाटक, मानव श्रृंखला एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों के सहयोग से किया जाएगा। उन्होंने बताया कि व्यसन मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत आयोजित इस सप्ताह के सफल संचालन हेतु भोपाल जिला समिति द्वारा ऑनलाइन गोष्ठियों एवं व्यापक संपर्क अभियान के माध्यम से तैयारियां की जा रही हैं।

हेमंत स्मरण हुआ अविस्मरणीय...

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

23 मई 2026 ,संभावना शील युवा कवि स्वर्गीय हेमंत के जन्मदिन पर अंतरराष्ट्रीय विश्व मैत्री मंच ने उन्हीं की कविताओं का पाठ करके उन्हें रचनात्मक श्रद्धांजलि दी। हेमंत के कविता संग्रह मेरे रहते में संकलित उनकी रचनाओं के पाठ की विशिष्ट गोष्ठी गूगल मीट पर आयोजित की गई, जिसमें पूरे देश और सुदूर विदेश में बसे 50 से ज्यादा साहित्यिक साथी शामिल हुए।

इस अवसर पर संचालन करते हुए महिमा श्रीवास्तव वर्मा ने कहा कि "समय की धारा बहुत कुछ बहा ले जाती है,पर कुछ नाम ऐसे होते हैं,जो समय के जल पर नहीं, हृदय की शिला पर लिखे जाते हैं। हेमंत भी ऐसी ही अमिट अनुभूति हैं। कविता के रूप में उनकी स्मृतियाँ अब भी इस वातावरण में सुवास की तरह तैर रही हैं,उनकी रचनाएँ अब भी मन की वीणा पर धीमे -धीमे बज रही हैं।आज की यह संध्या मानो स्मृतियों का एक दीपोत्सव बन गई, जहाँ हर शब्द ने उन्हें पुकारा,हर स्वर ने उन्हें महसूस किया और हर आँख ने अपने भीतर एक नम उजाला संजो लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ सुश्री जया आर्य की विशिष्ट सरस्वती वंदना द्वारा हुआ।

स्मृतियाँ कभी समाप्त नहीं होतीं। वो समय की किताब पर सुवासित पृष्ठ बनकर रह जाती हैं। डॉ. प्रमिला वर्मा ने हेमंत के व्यक्तित्व से जुड़ी बातें बताते हुए स्मृतियों का मंथन किया।

एक माँ के लिए पुत्र केवल एक संबंध नहीं होता,संतान के जन्म के साथ वह अपने हृदय का विस्तार करती है। संतान उसकी आत्मा अंश होती है और जब वही अंश स्मृतियों में बदल जाता है तो हर याद पूजा बन जाती है,हर साँस प्रार्थना हो जाती है।

संतोष श्रीवास्तव ने कहा कि मैं आज आभार नहीं दूँगी। हेमंत अब मेरा रहा कहां ,अब वह आप सबका हो गया। एक हेमंत खोकर मैंने उसकी स्मृति में*हेमंत स्मृति कविता सम्मान* से पुरस्कृत बहुत सारे हेमंत पा लिय

दिवंगत कथाकार पत्रकार स्व. अवधेश प्रीत ने हेमंत स्मृति पुरस्कार समारोह के लिए जो पंक्तियाँ हेमंत के लिए लिखकर भेजी थीं, उन्हें रानी सुमिता ने पढ़ा।

शब्दों के भीतर छिपे संवेदनात्मक सत्य को पहचानने की विलक्षण क्षमता रखने वाली लेखिका डॉ. नीलिमा रंजन ने हेमंत की पुस्तक "मेरे रहते" की भावों से भरी समीक्षा की। हेमंत की इसी पुस्तक से उनकी कविताओं का वाचन किया गया।

शेफालिका श्रीवास्तव-बसंत, मुजफ्फर सिद्दीकी -बस इतना, जया केतकी- मेरे रहते, गिरिजेश सक्सेना-पतझड़ , शकुंतला मित्तल -कबीर, अर्चना पंड्या -विश्वास करो, वंदना रानी दयाल-मुझे जियो, डॉ .शुभ्रा -गरीब की बेटी,मृदुला मिश्रा - जीवन क्रम, सत्यवती मौर्य- मन पर बिखर गए, मीता अग्रवाल - नियमों से बंधी धरती, क्षमा पांडे-लौटा दो, ज्योति गजभिए -ओ लहर मनचली, साधना वैद्य-सुगंध छुपती नहीं,डॉ.विनीता राहुरिकर-तुम हँसी ,मधुलिका सक्सेना -न मैं मंदिर, न मैं मस्जिद, सरस दरबारी-लौट नहीं पाऊँगा, शीर्षक से रचनाओं का पाठ किया।

सबने हेमंत को याद कर इस संध्या को अविस्मरणीय बना दिया।

प्रस्तुति : महिमा श्रीवास्तव वर्मा

जब हम विकसित होंगे तो क्या होगा

भारत के विकसित भारत बनने में अभी 21 साल का समय बाकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21 मई को मंत्रिपरिषद की बैठक में कहा कि यह उनकी सरकार के लिए सिर्फ एक वादा नहीं, बल्कि संकल्प है। संकल्प इतना बड़ा है कि इसकी गूंज चौतरफा सुनाई देती है। भाजपा के नेता तो कोई भी बात बिना विकसित भारत का जुमला बोले कह ही नहीं रहे हैं। वे तो खाना खाने और फारिग होने भी यह कहते हुए जा रहे हैं कि विकसित भारत के लिए ऐसा कर रहे हैं। एफएम रेडियो पर सुनने को मिला कि विकसित भारत के लिए लोग जनगणना में हिस्सा लें। सोचें, अंग्रेजों के जमाने से हर 10 साल पर जनगणना होती थी। दूसरे विश्वयुद्ध के समय भी जनगणना नहीं रूकी थी। लेकिन यह सरकार 10 साल पर जनगणना नहीं करा सकी। 15 साल के बाद जनगणना हो रही है और वह विकसित भारत के लिए हो रही है! बहरहाल, कसमें, वादों आदि के लिए तो हिंदी फिल्म के एक गाने में सुना है कि ये यूं ही होते हैं इनका क्या है लेकिन संकल्प तो संकल्प होते हैं। सो, उम्मीद करनी चाहिए और प्रार्थना भी करनी चाहिए कि विकसित भारत का संकल्प पूरा हो। 2047 में जब भारत विकसित होगा उस समय तक देश की आबादी 160 करोड़ से ज्यादा होगी। अगर विकसित भारत का संकल्प पूरा होता है तो इतनी बड़ी आबादी का जीवन बेहतर होगा। तभी सरकार से यह जानने की इच्छा हो रही है कि जब देश विकसित होगा तो क्या क्या होगा? अक्षय कुमार की एक फिल्म का गाना है, 'जब नौकरी मिलेगी तो क्या होगा? जिस्म पे सूट होगा, पांव में बूट होगा, हाथों में गोरी का हाथ होगा'। ऐसे ही जब भारत विकसित होगा तो क्या क्या होगा? यह सरकार को अभी बता देना चाहिए। ध्यान रहे विकसित भारत एक बड़ी अस्पष्ट सी बात है। कुछ भी करके आप कह सकते हैं कि भारत विकसित हो गया। जैसे कहा गया कि भारत खुले में शौच से मुक्त हो गया। हालांकि राजधानी दिल्ली में ही सुबह कहीं निकलिए तो लोग हाथ में बोतल लेकर जंगल या रेलवे ट्रैक की ओर जाते दिख जाते हैं। इसलिए बहुत जरूरी है कि एक एक बिंदु स्पष्ट कर दिया जाए कि भारत विकसित होगा तो उसमें क्या क्या होगा। मिसाल के तौर पर भारत की प्रति व्यक्ति आय अभी 28 सौ डॉलर यानी 2.45 लाख रुपए सालाना के करीब है। अगर विकसित देश के तौर पर ब्रिटेन को लेते हैं, जिसे पीछे छोड़ने का दावा पिछले दिनों किया गया था तो उसकी प्रति व्यक्ति आय 60 हजार डॉलर यानी करीब 55 लाख रुपए के करीब है। अगर एशिया के विकसित देश की बात करें तो जापान ले सकते हैं। उसकी प्रति व्यक्ति आय भी करीब 45 हजार डॉलर यानी 40 लाख रुपए के करीब है। अगले 21 साल में तो यह काफी बढ़ जाएगी फिर भी अभी के पैमाने से भी हम इनके कितने करीब पहुंचेंगे यह बता देना चाहिए। क्या 2047 तक भारत की प्रति व्यक्ति आय इन विकसित देशों की अभी की स्थिति के एक तिहाई या एक चौथाई यानी 10-12 लाख से 15-16 लाख रुपए सालाना तक पहुंचेगी? ऐसे ही जब भारत विकसित होगा तो उससे आगे सिर्फ चीन और अमेरिका की अर्थव्यवस्था होगी। अभी भारत की अर्थव्यवस्था चार ट्रिलियन डॉलर की है, जबकि चीन की करीब 20 ट्रिलियन डॉलर और अमेरिका की 30 ट्रिलियन डॉलर की है। यानी अर्थव्यवस्था के आकार में चीन भारत से पांच गुना बड़ा है और अमेरिका साढ़े सात गुना बड़ा है। उस समय यह अंतर कितना होगा? 2047 में इनकी अर्थव्यवस्था का जो आकार होगा क्या उसके आधे तक भारत पहुंच जाएगा? विकसित होने का एक बड़ा पैमाना प्रदूषण और वायु की गुणवत्ता होती है। भारत में पूरे साल औसत एयर क्वालिटी इंडेक्स यानी एक्यूआई डेढ़ सौ के करीब होता है और सर्दियों में यह पांच सौ के ऊपर चला जाता है। अभी भीषण गर्मी के बीच भी ग्रैप की पहली श्रेणी की पाबंदियां लगी हैं क्योंकि हवा प्रदूषित है। दूसरी ओर जापान में साल का औसत एक्यूआई 40 से 60 के बीच होता है। क्या भारत विकसित होगा तो यहां भी एक्यूआई विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से तय मानक के मुताबिक होगा? यह बात पानी और खाने पीने की चीजों की शुद्धता के बारे में भी स्पष्ट होनी चाहिए। ध्यान रहे विकसित देशों में लोगों के घरों में शुद्ध पानी सप्लाई होता है और उन्हें आरओ की जरुरत नहीं होती है। वे सीधे नल से निकाल कर पानी पीते हैं। इस तरह के कई पैमाने हैं, जिनके बारे में अभी स्पष्टता होनी चाहिए। जैसे जापान में किसान परिवारों की आय 40 से 45 लाख रुपए सालाना है, जबकि भारत में किसान परिवार की आय डेढ़ लाख रुपए सालाना की है। ऐसे किसानों को प्रधानमंत्री की ओर से सम्मान निधि के नाम पर पांच सौ रुपया महीना दिया जाता है। इसी तरह प्रति व्यक्ति डॉक्टर की उपलब्धता, प्रति व्यक्ति अस्पताल के बिस्तर की उपलब्धता, छात्र व शिक्षक का अनुपात, प्रति व्यक्ति रिसर्च का व्यय, प्रति व्यक्ति पौष्टिक भोजन की उपलब्धता, प्रति व्यक्ति बिजली की उपलब्धता, प्रति व्यक्ति सार्वजनिक परिवहन सुविधा आदि कैसी होगी, यह अभी बता देना चाहिए। जिन 80 करोड़ लोगों को पांच किलो अनाज मिलता है उनकी उस समय क्या स्थिति होगी यह भी बताना चाहिए। भारत विकसित हो जाएगा तो खेल, साहित्य, विज्ञान और कला के क्षेत्र में क्या स्थिति होगी? यह सवाल इसलिए है क्योंकि विकसित देश नोबल, बुकर और ओलंपिक के पदक जीतते हैं। इन क्षेत्रों में भारत का रिकॉर्ड बहुत खराब है। यह भी बताना चाहिए कि देश के लोगों के जीवन में खुशहाली आएगी या नहीं? खुशहाली के इंडेक्स में भारत 116वें स्थान पर है। ध्यान रहे विकसित भारत एक अस्पष्ट अवधारणा है, जिसके बारे में स्पष्टता की जरुरत है। कई मायने में भारत अब भी विकसित है। स्पेस के मामले में भारत की उपलब्धियां बहुत बड़ी हैं। इस मामले में भारत दुनिया के चार देशों में शामिल है। डीआरडीओ ने ऐसी मिसाइल क्षमता विकसित कर ली है, जो दुनिया के तीन या चार देशों के पास है। भारत एक परमाणु शक्ति संपन्न देश है। लेकिन ये उपलब्धियां तीन दशक पहले हासिल हो गई थीं। इसके बावजूद इनके आधार पर नहीं कहा जा सकता है कि भारत विकसित हो गया। विकसित होने का अर्थ है कि नागरिकों के जीवन की स्थितियां विकसित देशों के जैसी होंगी। उनके कुछ पैमाने ऊपर बताए गए हैं। खुद भारत सरकार का नीति आयोग टिकाऊ विकास के कुछ पैमाने तय करता है। उन सभी पैमानों पर भारत कहां होगा, यह बताना चाहिए ताकि 2047 में उस आधार पर आकलन हो सके।

-अजीत द्विवेदी

भारत का हर अवसर जाया है!

याद करें 14 मई 2014 से पहले के समय को! तब हवा में, लोगों की सांसों में, उम्मीदों में क्या कुछ था? उमंग थी, उम्मीदें थीं, 'अच्छे दिनों' की आहट थी। हिंदू कोई हो, वह भारत का अवसर आया बूझ रहा था। मानों हिंदुओं का कलियुग खत्म होने वाला है, सतयुग आ रहा है। काला धन, काली अर्थव्यवस्था खत्म होगी। भारत शक्तिमान बनेगा। आत्मनिर्भर होगा। तब भारत को स्वच्छ भी बनना था, स्मार्ट होना था, स्मार्ट शहर बनने थे और नई पीढ़ी का अमृतकाल बस आया! पर मैं संभवतः अब उन चुनिंदा लोगों में हूं, जिसने कई दफा प्रत्यक्षतः लाइव भारत के अवसर को आता समझा। उस बात को पचास साल होने वाले हैं, जब 1977 में दिल्ली के जंतर-मंतर रोड के जनता पार्टी दफ्तर (कांग्रेस, फिर संगठन कांग्रेस का मूल मुख्यालय) में सुरेंद्र मोहन, लालकृष्ण आडवाणी की प्रेस कॉन्फ्रेंस तथा डुप्ले रोड पर मोरारजी देसाई के घर की उस भीड़ में मैं था जब सभी एक भाव परिवर्तन की आस में थे। चुनाव नतीजों के दिन कस्तूरबा गांधी मार्ग में हिंदुस्तान टाइम्स की बिल्डिंग के बाहर ज्योंहि राजनारायण से इंदिरा गांधी के पीछे होने की खबर आई थी तो भीड़ उछल पड़ी थी। उसमें मैंने भी जन मूड देख सोचा यह तो क्रांति है। दिल्ली में तब पहली बार एक गैर-कांग्रेस केंद्र सरकार बनी थी। 19 महीने जेलों में रहे सच्चरित्र नेता प्रधानमंत्री और मंत्री बने। तब देश-दुनिया में भारत को लेकर जो उम्मीद की थी, वह अभूतपूर्व थी। आज उसकी कल्पना भी संभव नहीं है। बावजूद इसके मोरारजी सरकार के अवसर से क्या हुआ? मौका जाया हुआ। लोगों ने अपने को छला महसूस किया। मतलब शासन करना और देश बनाना इन लोगों के बस की बात नहीं है। इसी बात पर इंदिरा गांधी छल-कपट की राजनीति करके वापस प्रधानमंत्री बनीं। जिसका त्रासद सत्य है कि शासन कर सकने की समर्थता की हवा से सत्ता में लौटी इंदिरा गांधी का तब पंजाब, कश्मीर, उत्तर-पूर्व राज्यों में वह कुशासन था, जिससे अलगाववाद फैला। ऑपरेशन ब्लूस्टार हुआ। भारत की प्रधानमंत्री अपने ही घर में गोलियों से छलनी हुईं। फिर देश ने (मैंने भी) युवा राजीव गांधी से उम्मीद की। उन्होंने लोकसभा चुनाव में 415 सीट जीतने का वह रिकॉर्ड बनाया, जो आज तक नहीं टूटा है। संजय गांधी के कंट्रास्ट में राजीव गांधी भले और चाल-चेहरे-चरित्र में खरा युवा नायक थे। आधुनिकता, नई पीढ़ी, संचार-कंप्यूटर और भारत की पहचान में राजीव गांधी और उनकी दून मंडली ने वे प्रयोग किए, जिनकी यदि मोदी के बारह वर्षों के प्रयोगों से तुलना करें तो नई वास्तविकता उभरेगी। सोचें, विश्व में भारत की संस्कृति की पहचान के नाते बारह वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने क्या किया है? मोदी ने देशों में जाकर भक्त प्रवासी भारतीयों की भीड़ इकट्ठी कराई। उनसे अपने लिए नगाड़े, भंगड़ा, कथक, नाच-गाना कराया। ताकि विदेशियों को लगे कि देखो वे कैसे हिंदुओं के विश्वगुरु! जबकि राजीव गांधी के समय में क्या था? उन्होंने विश्व राजधानियों में 'फेस्टिवल ऑफ इंडिया' करवाए। भारत को अलग सांस्कृतिक क्षेत्रों में बांटा। और देश में संस्कृति की उत्सवता के आयोजन कराए। लोगों को सांस्कृतिक तौर पर चेतन किया। टीवी पर 'रामायण', 'महाभारत', 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया', 'चाणक्य' दिखलवाया। वही आज मोदी और उनके आईपीएस अफसर क्या कर रहे है? अपनी धुरंधरी दिखलाकर अपनी मार्केटिंग कर रहे हैं। राजीव ने रामजी और कृष्णजी की कथाएं दिखलाईं, मोदी-डोवाल अपने को दिखा रहे हैं! बात शुरू हुई तो बता दूं कि नेहरू, इंदिरा और राजीव से लेकर मनमोहन सिंह के समय तक विश्व में भारत की साख, लोकतांत्रिकता की धाक इसलिए भी थी क्योंकि भारत के ये प्रधानमंत्री वैश्विक पत्रकारों की प्रेस कॉन्फ्रेंस में जवाब देते थे। राजीव गांधी ने वाशिंगटन में नेशनल प्रेस क्लब में पत्रकारों को वे जवाब दिए, जिन्हें सुन दुनिया हतप्रभ थी। किसी पत्रकार का उनसे पाकिस्तान, खालिस्तान पर सवाल था तो राजीव

गांधी ने तपाक से ध्यान दिलाया कि महाराजा रणजीत सिंह की राजधानी लाहौर थी। पाकिस्तान बिलबिला गया। पर राजीव गांधी का समय भी धोखा था। कांग्रेस को दलालों से मुक्त करते-करते वे खुद दलालों-विभीषणों में फंसे। बोफोर्स हल्ला हुआ और वीपी सिंह ने लोगों के बीच जाकर कहा, "मेरी जेब में वह कागज है, जिसमें विदेशी बैंक का वह अकाउंट नंबर है, जिसमें बोफोर्स की दलाली का पैसा जमा हुआ है"! तब देश (मैं भी) वीपी सिंह के पीछे दौड़ा। यह सोच कि राजा नहीं फकीर है, देश की तकदीर है। और लोगों की उम्मीदों से फकीर सचमुच प्रधानमंत्री बना। उस समय की दिल्ली के जो गवाह हैं, वे सब जानते हैं कि मैंने 'जनसत्ता' में अपने कॉलम, लेख, रिपोर्टिंग सबमें फकीर से उम्मीदों में वैसी ही तूताड़ी बजाई, जैसे 2014 से पहले नरेंद्र मोदी के लिए अपने कॉलम, अपने 'सेंट्रल हॉल' प्रोग्राम और इसी 'नया इंडिया' अखबार में बजाई थी! वीपी सिंह से स्वच्छ, भ्रष्टाचार-मुक्त भारत होने का अवसर था। सभी ने सोचा ऐसा होगा। सभी को उम्मीद थी। मगर प्रधानमंत्री पद पाते ही फकीर सत्ता का ऐसा लोभी, भूखा बना कि उससे समझ बनी कि सत्ता में रहना है तो समाज को बांटो और राज पक्का बनाओ। शरद यादव, रामविलास, लालू यादव ने वीपी सिंह को चने की झाड़ पर चढ़ाया। मंडल आरक्षण की वह तुरुप चली जो वीपी सिंह और भारत दोनों के अवसर में सेल्फगोल था। तुरंत कमंडल यानी हिंदू राजनीति रथ लेकर सड़कों पर उतर आई। कश्मीर घाटी से हिंदू भागे। वहीं पंजाब, उत्तर-पूर्व में अशांति, अर्थव्यवस्था, विदेशी मुद्रा कोष आदि सब कुछ बेकाबू! कोई न माने इस बात को, लेकिन उसके बाद पीवी नरसिंह राव यदि नहीं आते तो भारत की भारी दुर्दशा होती। नरसिंह राव ने बतौर संकटमोचक सब संभाला। वे बिना उम्मीदों वाले प्रधानमंत्री थे। पर उन्होंने समय का उपयोग किया और वह किया, जिससे नई 21वीं सदी की राह, आगे की संभावना (आईटी, उदारीकरण, भूमंडलीकरण, परमाणु शक्ति, निवेश, भारतीयों के लिए विदेश में असर आदि) के खिड़की-दरवाजे खुले! उनके आगे न देवगौड़ा, न आई. के. गुजराल का समय उम्मीदों का था और न अटल बिहारी वाजपेयी या डॉ. मनमोहन सिंह का समय लोगों के मनोभावों में उम्मीदों-अवसरों का था। उस नाते मई 2014 में ही सिर्फ घर-घर उम्मीदों का विश्वास था। मतलब नरेंद्र मोदी आएंगे तो युग बदलेगा। वह भारत की नई आजादी होगी। स्वाभाविक था। आखिर 90 वर्षों से हिंदू राजनीति (रामराज्य परिषद, हिंदू महासभा, जनसंघ, भाजपा, आरएसएस से लेकर बाल ठाकरे की शिव सेना, सावरकर से बलराज मधोक सभी) हिंदू अवसर के सपनों से ही कई पीढ़ियों को खपाते हुए थी। मतलब मुगलों, मैकाले के मानस पुत्रों से भारत को कब मुक्ति मिलेगी और कब पृथ्वीराज चौहान के बाद लाल किले पर कोई खांटी हिंदू बतौर प्रधानमंत्री भाषण करेगा। ध्यान रहे, स्वंयसेवकों की इस हिंदू राजनीति में नेहरू से वाजपेयी सभी मैकाले की शिक्षा की पैदाइश थे। नेहरू यदि अंग्रेजों के मानस पुत्र थे तो वाजपेयी नेहरू के मानस उत्तराधिकारी। सो, मई 2014 का समय भारत का वह मौका, वह अवसर था, जो अमृतकाल, रजतकाल, स्वर्णकाल, विकसित काल सभी के उदय की मानो नई सुबह! अब बारह साल बाद आज क्या भारत है? भारत की क्या आबोहवा है? कल अमेरिका के विदेश मंत्री दिल्ली में थे। उन्होंने कहा, "मैं यह भाषण छोटा रखना चाहता हूं क्योंकि यहां बहुत गर्मी है। मैं मयामी से आता हूं और वहां भी बहुत उमस व गर्मी होती है, लेकिन यहां की गर्मी तो अलग ही है!" कल ही एक और खबर थी, कॉकरोच जनता पार्टी अकाउंट के संस्थापक अभिजीत दीपके ने बताया, "सरकार ने हमारी वेबसाइट बंद कर दी है। सरकार कॉकरोच से क्यों इतनी डरी हुई है?" सोचें, नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद के भारत की मौजूदा आबोहवा पर? अच्छे दिन हैं या बुरे? 2014 के समय में पैदा हुए मौके में सत्ताखोर परजीवी, आश्रित, भय-भूख-भक्ति की गुलामी में जकड़े लोग तथा क्रोनी सेठ जरूर अपने दिन फिर गए हुए मानें, लेकिन उस आम भारतीय की क्या दशा है, जिसने 'अच्छे दिनों' की आस में नरेंद्र मोदी को जीताया था। भारत का आज कैसा हैं? कैसी गर्मी, हवा, पानी, मिट्टी, शिक्षा, चिकित्सा, भीड़ और भीड़ की बुद्धि है? इन बारह वर्षों में भारत सत्य, विवेक, चरित्र, नैतिकता, चाल-चेहरा, चरित्र सब गंवा बैठा है। मेरी तुलना मैकाले बनाम संघ शिक्षा, बुद्धि बनाम लाठी शिक्षा से नहीं है, बल्कि व्यक्तियों के चेहरों और देश की 140 करोड़ आबादी की दशा-दिशा से है, जो 2014 से पहले क्या थी और आज क्या है। 2014 से पहले भारत की पहचान में मनुष्य थे। आज कॉकरोच हैं। हिंदू बनाम मुसलमान भी है। बेचारा मध्यवर्ग है तो गरीब-गुरबों की लाभार्थी यानी परजीवी जिंदगी भी है 2014 से पहले भारत की जनता न कॉकरोच थी, न कॉकरोच कहलाना पसंद करती थी। तब भारत का सुप्रीम कोर्ट गणतंत्र के नागरिक को 'कॉकरोच' नहीं कहता था। तब मय दस्तावेजों के 27 लाख मतदाताओं के नरसंहार की चुनाव आयोग में हिम्मत नहीं थी। तब भारत में व्यवस्था इतनी संवेदनशील थी कि यदि विश्व समुदाय दक्षिण एशिया को जलवायु परिवर्तन का भावी नरक बता रहा है तो उसे समझा जाए, न कि आज जैसे सरकार उलटे कोयले की नई खानें चालू करवा दे। हवा को और प्रदूषित करे। वह जलवायु को हर तरह से और बिगाड़ने, गर्मी के वैश्विक रिकॉर्ड बनवाने के काम करे। लब्बोलुआब? भारत अभिशप्त है। कलियुगी हिंदुओं को श्राप है कि वे झूठ में ही जिएं। 'नरककुंड' में जिएं मगर उसे स्वर्ग मानें! कौम न स्वतंत्र, निर्भयी, आत्मनिर्भर हो सकती है, न वह सत्य और झूठ में भेद कर सकती है। उसे परजीविता यानी कॉकरोच का जीवन जीते रहना है। तभी आज का अजब सत्य है जो भारत गणतंत्र में कॉकरोच उर्फ गणों पर भी बात कहने की पाबंदी है। भारत के कॉकरोच बोल भी नहीं सकते। क्या यह सब मई 2014 की उम्मीदों में था? मगर दोष मोदी का ही नहीं है। भारत के हिंदुओं के अभिशाप का है।

-हरिशंकर व्यास

बेचैन करने वाली बात!

अफसोसनाक है कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान युद्धविराम से लेकर आज तक कई महत्त्वपूर्ण फैसलों का एलान अमेरिका ने भारत सरकार के कुछ कहने से पहले कर दिया है। इस सिलसिले में नई कड़ी मार्को रुबियो ने जोड़ी है। भारत अपनी विदेश नीति में किस संबंध को प्राथमिकता दे, यह तय करना निर्वाचित केंद्र सरकार का संप्रभु अधिकार है। इसलिए अमेरिका से प्रगाढ़ रिश्ते बनाने की नीति देश के अंदर बहस का मुद्दा हो सकती है, लेकिन नरेंद्र मोदी सरकार के इस निर्णय को चुनौती नहीं दी जा सकती। वैसे भी इस मामले में वामपंथी दलों जैसे कुछ अपवादों को छोड़ कर भारत के राजनीतिक वर्ग में लगभग आम सहमति है। बहरहाल, यह नीतिगत झुकाव इस हद तक चला जाए कि अमेरिका भारत सरकार की ओर से फैसले लेता दिखे, तो यह ना सिर्फ एतराज का पहलू है, बल्कि इस पर जताए गए विरोध को उचित भी माना जाएगा।

अफसोसनाक है कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान युद्धविराम से लेकर आज तक अनेक महत्त्वपूर्ण फैसलों का एलान अमेरिकी अधिकारियों ने भारत सरकार के कुछ कहने से पहले कर दिया है। इस सिलसिले में नई कड़ी भारत यात्रा पर आने से पहले अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने जोड़ी, जब उन्होंने वॉशिंगटन में यह एलान किया कि भारत वेनेजुएला से तेल खरीदेगा और जल्द ही वेनेजुएला की कार्यवाहक राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिगेज नई दिल्ली जाएंगी। भारत आने के बाद उन्होंने यह घोषणा कर डाली कि भारत पांच साल में अमेरिका से 500 बिलियन डॉलर की खरीदारी करेगा। पहले बताया गया था कि यह खरीदारी अमेरिका से होने वाले द्विपक्षीय व्यापार समझौते का हिस्सा होगी। तब डॉनल्ड ट्रंप प्रशासन के टैरिफ वॉर के खिलाफ अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट का फैसला नहीं आया था। उसके निर्णय ने व्यापार समझौते की पूरी पृष्ठभूमि बदल डाली।

बहरहाल, समझौता अभी कहीं अटका हुआ है, जबकि खरीदारी की शर्त पर भारत के सहमत होने की घोषणा रुबियो ने कर डाली है! भारत सरकार की ओर से विरोध ना जताया जाना उनकी बात की पुष्टि के रूप में देखा गया है। ऐसे अन्य उदाहरण भी हैं, जिनसे अमेरिका द्विपक्षीय एवं अंतरराष्ट्रीय संबंधों को पुनर्परिभाषित करता दिख रहा है। वह सहयोगी देशों को मातहत दिखा कर अपनी नव-औपनिवेशिक नीति को आगे बढ़ता मालूम पड़ा है। क्या मोदी सरकार इसमें सहभागी बनने को तैयार है? यह सवाल देश के बड़े जनमत को बेचैन कर रहा है।

इस भीषण गर्मी में सोचे पारंपरिक उपाय!

हर पर्यावरणविद् मानता है कि पारंपरिक जलाशयों को सुधार कर उनकी जल संचय क्षमता को बढ़ा कर और सघन वृक्षावली तैयार करके मौसम के मिज़ाज को कुछ हद तक बदला भी जा सकता है। प्रधान मंत्री मोदी का जल शक्ति अभियान और बरसों से चले आ रहे वृक्षारोपण के सरकारी अभियान अगर ईमानदारी से चलाए जाते तो देश के पर्यावरण की हालत आज इतनी दयनीय न होती।

पिछले कुछ समय से, मौसम वैज्ञानिकों के हवाले से, यह खबर आ रही है कि इस साल भीषण गर्मी पड़ने वाली है। इस खबर से सबसे ज़्यादा चिंता कृषि वैज्ञानिकों और किसानों को है। ऐसी भविष्यवाणियाँ की जा रही हैं कि इस साल भी गर्मी विकराल रूप ले लेगी। जिससे सूखे जैसे हालत पैदा हो सकते हैं। ख़रीब की फसल पर तो इसका बुरा असर पड़ेगा ही पर रवि की उपज पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। अमेरिका और ईरान युद्ध के चलते पहले ही ऊर्जा संसाधनों पर महंगाई का असर दिखने लगा है और यदि गर्मी ने भी अपना असर दिखाया तो हालत बेकाबू हो सकते हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि इस बढ़ती गर्मी के कारण गेहूं का उत्पादन काफ़ी कम रहेगा। इसके साथ ही फल और सब्ज़ियों के उत्पादन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ेगा। नतीजतन खाद्य पदार्थों के दामों में काफ़ी बढ़ौतरी कि संभावना है। कितना असर होगा ये आने वाले समय पर ही पता चल पाएगा दरअसल गर्मी बढ़ने का एक प्रमुख कारण सर्दियों में होने वाली बारिश का लगातार कम होते जाना है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार दिसंबर, जनवरी और फ़रवरी में औसत तापमान से एक या दो डिग्री ज़्यादा दर्ज किया गया है। इतना सा तापमान बढ़ने से बारिश की मात्रा घट गई है। ये तो रही कृषि उत्पादनों की बात, लेकिन अगर शहरी जीवन को देखें तो ये समस्या और भी बड़ा विकराल रूप धारण करने जा रही है। हमारा अनुभव है कि गर्मियों में जब ताल-तलैये सूख जाते हैं और नदियों में भी जल की आवक घट जाती है तो सिंचाई के अलावा सामान्य जन-जीवन में भी पानी का संकट गहरा जाता है। नगर पालिकाएँ आवश्यकता के अनुरूप जल की आपूर्ति नहीं कर पाती। इसलिए निर्बल वर्ग की बस्तियों में अक्सर सार्वजनिक नलों पर संग्राम छिड़ते हुए देखे जाते हैं। नलों में पानी बहुत कम देर के लिए आता है। मध्यम वर्गीय परिवारों को भी

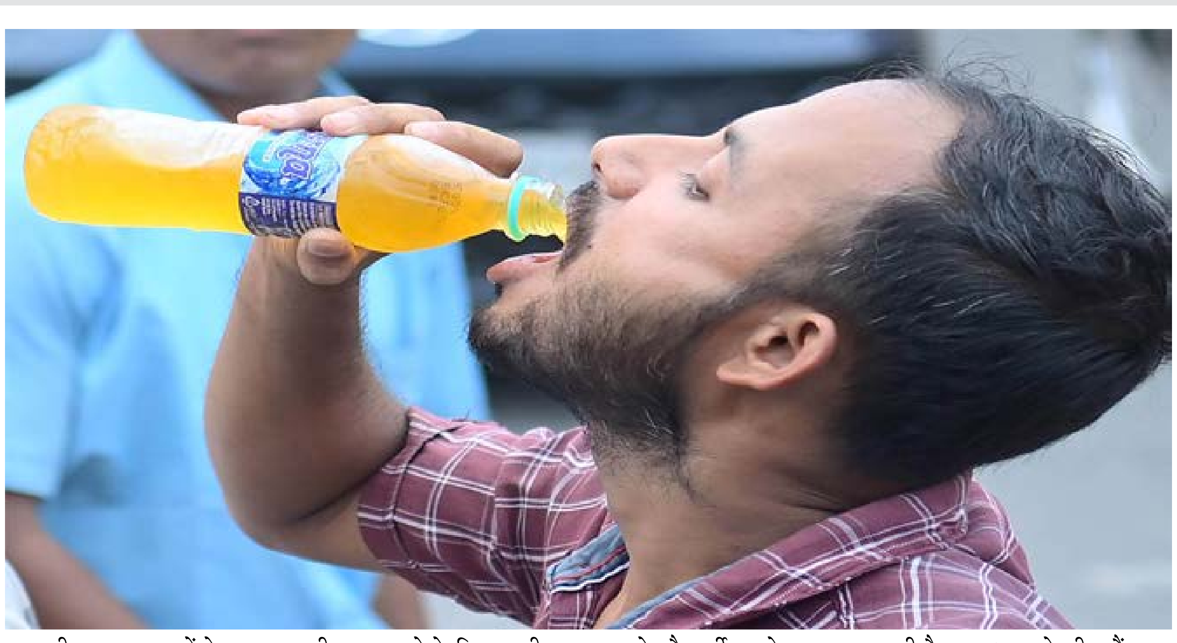

अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप पानी एकत्र करने के लिए काफ़ी मशक़्क़त करनी पड़ती है। राजनेताओं, अधिकारियों और संपन्न लोगों को इन विपरीत परिस्थितियों में भी जल संकट का सामना नहीं करना पड़ता। क्योंकि ये लोग आवश्यकता से कई गुना ज़्यादा जल जमा कर लेते हैं। असली मार तो आम लोगों पर पड़ती है। भीषण गर्मी पड़ने के साथ लोग कूलर या एयर कंडीशनर की तरफ़ भागते हैं। इससे जल और विद्युत दोनों का संकट बड़ जाता है। हाइड्रो पावर प्लांट में जल आपूर्ति की मात्रा घटने से विद्युत उत्पादन गिरने लगता है। जैसे-जैसे समाज पारंपरिक तरीक़ों को छोड़ कर बिजली से चलने वाले उपकरणों की तरफ़ बढ़ रहा है वैसे-वैसे वातावरण और भी गर्म होता जा रहा है। एयर कंडीशनरों से निकलने वाली गर्म हवा भी वातावरण को प्रदूषित करने और गर्मी बढ़ाने का काम कर रही है। 1974-76 के बीच मैं एक स्वयंसेवक के रूप में मुरादाबाद के निकट अमरपुरकाशी गाँव में समाज सेवा की भावना से काफ़ी समय तक रहा। इस दौरान हर मौसम में गाँव के जीवन को जिया। मुझे याद है कि मई जून की तपती गर्मी और लू के बावजूद हम सब स्वयंसेवक दोपहर में खुले दालान पर नीम के पेड़ की छाया में सोया करते थे। तब वो छाया ही काफ़ी ठण्डी लगती थी। गर्म लू जब पसीना सुखाती थी तो शरीर में ठंडक महसूस होती थी। इसी तरह रात में छत पर पानी छिड़क कर सब सो जाते थे। रात के ग्यारह-बारह बजे तक तो गर्म हवा चलती थी, फिर धरती की तपिश ख़त्म होने के बाद ठण्डी हवा चलने लगती थी। सूर्योदय के समय की बयार तो इतनी स्फूर्तिदायक होती थी कि पूरा शरीर नई ऊर्जा से संचालित होता था। वहाँ न तो फ्रिज का ठण्डा पानी था, न कोई और इंतज़ाम। लेकिन हैंडपम्प का पानी या मिट्टी के घड़े का पानी शीतलता के साथ सौंधापन लिये शरीर के लिए भी गुणकारी होता था। जबकि आज आरओ के पानी ने हम सबको बीमार बना दिया है। क्योंकि आरओ की मशीन जल के सभी प्राकृतिक गुणों को नष्ट कर देती है। कुएँ से एक डोल पानी खींच कर सिर पर उड़ेलते ही सारे बदन में फुरफुरी आ जाती थी। जिस से दिन भर के श्रमदान की सारी थकावट क्षणों में काफ़ूर हो जाती थी। आजकल हर व्यक्ति, चाहे उसकी हैसियत हो या न हो शरीर को कृत्रिम तरीक़े से ठण्डा रखने के उपकरणों को ख़रीदने की चाहत रखता है। हम सब इसके शिकार बन चुके हैं और इसका ख़ामियाज़ा मौसम के बदले मिज़ास और बढ़ती गर्मी को झेल कर भुगत रहे हैं। इस आधुनिक दिनचर्या का बहुत बुरा प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ रहा है। हर शहर में लगातार बढ़ते अस्पताल और दवा की दुकानें इस बात का प्रमाण हैं कि 'सुजलाम् सुफलाम् मलय़जशीतलाम्, शस्यश्यामलाम्' वाले देश के हम सब नागरिक बीमारियों से घिरते जा रहे हैं। न तो हमें अपने भविष्य की चिंता है, न ही सरकारों को। समस्याएँ दिन प्रतिदिन सुलझने के बजाए उलझती जा रही हैं। दूसरी तरफ़ हर पर्यावरणविद् मानता है कि पारंपरिक जलाशयों को सुधार कर उनकी जल संचय क्षमता को बढ़ा कर और सघन वृक्षावली तैयार करके मौसम के मिज़ाज को कुछ हद तक बदला भी जा सकता है। प्रधान मंत्री मोदी का जल शक्ति अभियान और बरसों से चले आ रहे वृक्षारोपण के सरकारी अभियान अगर ईमानदारी से चलाए जाते तो देश के पर्यावरण की हालत आज इतनी दयनीय न होती। सभी जानते हैं कि सरकार द्वारा जहां एक ओर तो वृक्षारोपण व तालाब खोदने को बढ़ावा दिया जा रहा है, वहीं जमीनी स्तर पर कथनी और करनी में काफ़ी अंतर है। मिसाल के तौर पर जालौन क्षेत्र में 400 छोटे बांध बनाए गए थे। इनमें से आधे से ज्यादा तबाह हो चुके हैं। ललितपुर जिले में जल संरक्षण के लिए तीन करोड़ रुपये से चल रहा काम निरर्थक हो चुका है। इसी इलाके में बादहा और रसिन बांध के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च हुए, लेकिन इनका भी नतीजा शून्य ही रहा। इसलिए यदि हम पारंपरिक तरीकों पर ध्यान नहीं देंगे तो ऐसे संकट आते रहेंगे।

-विनीत नारायण

2035 तक तैयार होगा स्वदेशी 5th जेनरेशन स्टील्थ फाइटर, AMCA प्रोजेक्ट की रेस में तीन दिग्गज कंपनियां

एजेंसी नई दिल्ली

रक्षा अधिकारियों के अनुसार, आरएफपी तीन चयनित उद्योग संघों को भेजा गया है। इनमें लार्सन एंड टुब्रो-भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड समूह, टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स और भारत फोर्ज-बीईएमएल संघ शामिल हैं। रक्षा मंत्रालय ने बुधवार को महत्वाकांक्षी स्वदेशी उन्नत मध्यम लड़ाकू विमान (एएमसीए) कार्यक्रम के लिए प्रस्ताव हेतु अनुरोध (आरएफपी) जारी किया, जो भारत की पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान परियोजना में एक महत्वपूर्ण कदम है। रक्षा अधिकारियों के अनुसार, आरएफपी तीन चयनित उद्योग संघों को भेजा गया है। इनमें लार्सन एंड टुब्रो-भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड समूह, टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स और भारत फोर्ज-बीईएमएल संघ शामिल हैं। एएमसीए परियोजना को भारत के सबसे महत्वपूर्ण रक्षा विमानन कार्यक्रमों में से एक माना जाता है। इसका उद्देश्य भारतीय वायु सेना के लिए स्वदेशी पांचवीं पीढ़ी का स्टील्थ लड़ाकू विमान विकसित करना है, जिससे उन्नत सैन्य प्रौद्योगिकी में देश की आत्मनिर्भरता मजबूत हो सके। रक्षा मंत्रालय ने इस वर्ष फरवरी में टाटा समूह, लार्सन एंड टुब्रो (एल एंड टी) और भारत फोर्ज को उन्नत बहुस्तरीय लड़ाकू विमान (एएमसीए) कार्यक्रम के तहत पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान विकसित करने के लिए चुना था। एक महत्वपूर्ण निर्णय के रूप में, सरकारी स्वामित्व वाली हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) को इस परियोजना के विकास में शामिल नहीं किया गया है।

सरकार ने एएमसीए प्रोटोटाइप के निर्माण और विकास के लिए 15,000 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। हालांकि, अधिकारियों का मानना है कि पूर्ण पैमाने पर उत्पादन शुरू होने के बाद कार्यक्रम की कुल लागत में काफी वृद्धि होगी। वर्तमान योजना के अनुसार, भारतीय वायु सेना (आईएएफ) एएमसीए बेड़े के प्रारंभिक चरण में लगभग 120 विमानों को शामिल करने की संभावना है। कार्यक्रम के रोडमैप में कहा गया है कि प्रोटोटाइप विकास 2030 तक पूरा करने का लक्ष्य है। इसके बाद, एएमसीए जेट के पहले स्क्वाड्रन के 2035 तक भारतीय वायु सेना में शामिल होने की उम्मीद है। इस माह की शुरुआत में, केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने श्री सत्य साई जिले के पुट्टपर्थी क्षेत्र में एक बड़ी रक्षा अवसंरचना परियोजना की आधारशिला रखी। यह परियोजना उन्नत मध्यम लड़ाकू विमान (एएमसीए) कार्यक्रम से जुड़ी है। लगभग 16,000 करोड़ रुपये की इस पहल से भारत की रक्षा विनिर्माण क्षमताओं को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। अधिकारियों का कहना है कि इस परियोजना से लगभग 7,500 रोजगार सृजित होने की उम्मीद है। इसे रक्षा उत्पादन क्षेत्र में नवाचार और विकास को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में भी देखा जा रहा है।

सीपैक और बलूचिस्तान ने तोड़ी पाकिस्तान की कमर, सैनिकों के हौसले पस्त, भारत पर ठीकरा फोड़ रहे असीम मुनीर

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तान इन दिनों सीपीईसी प्रोजेक्ट्स को लेकर चीन के बढ़ते दबाव और बलूचिस्तान में विद्रोहियों के हमलों से जूझ रहा है। इन दोनों घटनाओं ने पाकिस्तानी सेना के मनोबल को तोड़कर रख दिया है। ऐसे में पाकिस्तानी सेना ने एक बार फिर अवाम का ध्यान बाहरी मुद्दों की ओर भटकाने की अपनी पुरानी चाल का सहारा लिया है। इसका सबूत हाल में ही बलूचिस्तान में जाफर एक्सप्रेस को निशाना बनाकर किए गए बम हमले के बाद देखने को मिला है। इस हमले में 25 से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। अब पाकिस्तानी सेना जाफर एक्सप्रेस विस्फोट का आरोप भारत पर लगाकर अवाम को भड़काने की कोशिश कर रही है।

रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तानी सेना प्रमुख फील्ड मार्शल असीम मुनीर जाफर एक्सप्रेस पर हुए हमले के तुरंत बाद देश की पश्चिमी सीमा पर पहुंचे। इस दौरान उन्होंने बलूचिस्तान में हो रहे हमलों का इल्जाम भारत पर लगाया। उन्होंने बिना सबूत के दावा किया कि भारत पाकिस्तान के अंदर "आतंकवाद को सक्रिय रूप से बढ़ावा और प्रायोजित" कर रहा है। उनका यह बयान पाकिस्तान की सरकार परस्त मीडिया की सुर्खियां बना। इससे गंभीर संकट का सामना कर रही पाकिस्तानी अवाम का ध्यान अंदरुनी मुद्दों से डायवर्ट हुआ।

CNN-News18 की रिपोर्ट के अनुसार, असीम मुनीर की आक्रामक बयानबाजी के पीछे का मकसद पाकिस्तानी सेना के अंदर फैली भारी घबराहट को छिपाना है। मुनीर ने बलूचिस्तान के विद्रोहियों को "फितना-अल-हिंदुस्तान" नाम दिया है।

पाकिस्तानी सेना के प्रॉपगैंडा विंग इंटर सर्विसेज पब्लिक रिलेशन के डायरेक्टर जनरल लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी भी लगातार प्रेस कॉन्फ्रेंस कर भारत के खिलाफ जहर उगल रहे हैं। उनके बयानों को सुनकर कोई भी आदमी सिर पकड़ लेगा कि पाकिस्तानी सेना का वरिष्ठ जनरल किस हद तक बचकानी बयानबाजी कर रहा है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि पाकिस्तानी सेना के शीर्ष अधिकारियों के बीच गहरी हताशा फैली हुई है।

पाकिस्तान सेना इन दिनों आत्मविश्वास के भारी संकट और चीनी संपत्तियों की रक्षा करने में पूरी तरह नाकाम रहने जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐसे में भारत के खिलाफ बयानबाजी पाकिस्तान की एक जानी-पहचानी चाल है। इसका मकसद अवाम का ध्यान अंदरूनी शासन की नाकामियों से हटाना है। बलूच विद्रोहियों और तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (TTP) के विद्रोह को "भारत द्वारा प्रायोजित" बताकर, पाकिस्तानी सेना का शीर्ष नेतृत्व हताश हो चुकी जनता को एक बार फिर देश के झंडे तले एकजुट करने की बेताब कोशिश कर रहा है।

चांद पर छिपे 'बर्फ के खजाने' का भारत ने लगाया पता, चंद्रयान-2 की खोज से दुनिया हैरान

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के चंद्रयान-2 मिशन ने चांद को लेकर एक और बड़ा रहस्य उजागर किया है। अहमदाबाद स्थित फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरी (PRL) के वैज्ञानिकों ने चांद के दक्षिणी ध्रुव के बेहद ठंडे और अंधेरे क्रेटरों के नीचे बर्फ के मजबूत संकेत खोजे हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह खोज भविष्य में चांद पर इंसानी बस्तियां बसाने, पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने और अंतरिक्ष मिशनों के लिए ईंधन तैयार करने की दिशा में गेमचेंजर साबित हो सकती है। यह खोज चंद्रयान-2 ऑर्बिटर में लगे 'डुअल फ्रीक्वेंसी सिंथेटिक अपर्चर रडार' (DFSAR) उपकरण से मिले डेटा के आधार पर की गई है। यह माइक्रोवेव इमेजिंग तकनीक चंद्र सतह के नीचे तक जांच करने में सक्षम है। वैज्ञानिकों ने दक्षिणी ध्रुव के कई क्रेटरों का अध्ययन किया, जिनमें 'फॉस्टिनी क्रेटर' के भीतर स्थित लगभग 1.1 किलोमीटर चौड़े एक छोटे क्रेटर में बर्फ के सबसे मजबूत संकेत मिले हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार इस क्रेटर में 'लोबेट-रिम मॉर्फोलॉजी' जैसी विशेष संरचना भी देखी गई, जो किसी बहाव जैसी आकृति को दर्शाती है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह संकेत हो सकता है कि उल्कापिंड का प्रभाव चंद्रमा की सतह के नीचे मौजूद बर्फ-समृद्ध परत तक पहुंचा था। यही वजह है कि वैज्ञानिक इस खोज को बेहद महत्वपूर्ण मान रहे हैं।

यह रिसर्च उन बढ़ते वैज्ञानिक प्रमाणों को और मजबूत करती है जिनमें चांद के ध्रुवीय क्षेत्रों में पानी या बर्फ की मौजूदगी की संभावना जताई गई है। इससे पहले भी चंद्रयान-2 के अध्ययन में चंद्र सतह पर पानी के अणुओं और हाइड्रॉक्सिल के संकेत मिले थे। हाल के वर्षों में ऑर्बिटर ने हाई-रेजोल्यूशन पोलर मैप्स तैयार किए हैं, जिनकी मदद से बर्फ वाले क्षेत्रों की पहचान की जा रही है। ISRO के मुताबिक चंद्रयान-2 का DFSAR एक बड़ी तकनीकी उपलब्धि माना जाता है, क्योंकि यह चांद का अध्ययन करने वाला दुनिया का पहला पूर्ण पोलरिमेट्रिक सिंथेटिक अपर्चर रडार है, जो L-बैंड और S-बैंड दोनों फ्रीक्वेंसी पर काम करता है। 2019 में चंद्र कक्षा में पहुंचने के बाद से यह ऑर्बिटर हजारों डेटा सेट तैयार कर चुका है, जिनसे चांद की सतह और उसकी संरचना को समझने में मदद मिली है। विशेषज्ञों का मानना है कि चांद पर बर्फ की मौजूदगी भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों के लिए गेमचेंजर साबित हो सकती है। पानी की बर्फ को पीने के पानी, ऑक्सीजन और यहां तक कि रॉकेट ईंधन में भी बदला जा सकता है। ऐसे में यह खोज लंबे समय तक चांद पर मानव मौजूदगी कायम करने की दिशा में एक बड़ा कदम मानी जा रही है।

चौतरफा विरोध का कारण... नेपाल में 2 महीने में ही फीकी पड़ी पीएम बालेन शाह की चमक!

एजेंसी काठमांडू

नेपाल के प्रधानमंत्री बालेन शाह को सरकार बनाए दो महीने पूरे हो चुके हैं। उन्होंने बदलाव के नाम पर चुनाव जीता और सरकार बनाई। हालांकि, उनकी सरकार शुरू से ही विवादों में घिरी रही। अब नेपाल के युवा भी बालेन शाह सरकार को पसंद नहीं कर रहे हैं। इसका प्रमुख कारण चुनावी वादों को पूरा करने के प्रति उनकी अनिच्छा है। नेपाल के सरकारी ट्रैकर के अनुसार, बालेन शाह सरकार कई अहम वादों को पूरा करने में तय समय से पीछे चल रही है। इतना ही नहीं,उनके प्रशासन के भीतर राजनीतिक और प्रशासनिक तनाव के शुरुआती संकेत भी उभरने लगे हैं। सरकार बनने के एक महीने के अंदर दो मंत्रियों के इस्तीफे ने बालेन शाह सरकार को सबसे बड़ा झटका दिया था। सबसे पहले बालेन शाह सरकार में श्रम, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा मंत्री दीपक कुमार शाह को पद के दुरुपयोग और अनुशासनहीनता के आरोप में 9 अप्रैल 2026 को बर्खास्त कर दिया गया था। उन पर अपनी पत्नी को स्वास्थ्य बीमा बोर्ड में बनाए रखने के लिए पद का गलत इस्तेमाल करने का आरोप लगा था, जिसके बाद सरकार ने कड़ी कार्रवाई करते हुए उन्हें उनके पद से हटा दिया था। इसके बाद नेपाल के गृह मंत्री सुदान गुरुंग ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। अपने ऊपर उठ रहे सवालों और शेयर निवेश से जुड़े आरोपों की निष्पक्ष जांच सुनिश्चित करने के लिए, उन्होंने कार्यकाल के महज 26वें दिन नैतिक आधार पर यह कदम उठाया था।

इसके अलावा बालेन शाह सरकार अहम फैसलों पर कानूनी विवाद, शासन शैली पर बढ़ती निगरानी को लेकर आलोचना के केंद्र में रही। सरकार ने अध्यादेशों की भरमार लगा दी। उसने संस्थागत प्रक्रियाओं को दरकिनार किया, राजनीतिक लाभ के लिए शीर्ष नेताओं की गिरफ्तार कराया। इन कदमों ने लोगों की नजरों में बालेन शाह सरकार की इज्जत को गिराया है। इतना ही नहीं, बालेन शाह ने कई ऐसे कदम भी उठाए, जिनका बड़े पैमाने पर विरोध हुआ। इनमें लोगों के घरों को बुलडोजर से तोड़ा जाना और भारत से लगी सीमा पर कस्टम जांच के नाम पर लोगों को प्रताड़ित करने के कदम भी शामिल हैं। बालेन शाह नेपाली जनता की अभूतपूर्व उम्मीदों की लहर पर सवार होकर सत्ता में आए। यह लहर पिछले साल तब पैदा हुई थी, जब नेपाल में भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और बेरोजगारी के खिलाफ Gen Z (युवा पीढ़ी) के नेतृत्व में एक आंदोलन छिड़ा था। इस आंदोलन ने तत्कालीन प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को इस्तीफा देने पर मजबूर कर दिया था और देश की राजनीतिक व्यवस्था को पूरी तरह से बदल दिया था।

इसके बाद हुए चुनावों में, युवा मतदाताओं ने 35 वर्षीय रैपर बालेन शाह को अपना नेता बनाया। उन्हें उम्मीद थी कि बालेन पारंपरिक राजनीति से हटकर कुछ नया और निर्णायक बदलाव लाएंगे। 27 मार्च को नेपाल के प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ लेने के बाद, बालेन शाह ने तेजी से कदम उठाते हुए 100 बिंदुओं वाले एक महत्वाकांक्षी 'शासन सुधार एजेंडा' को मंजूरी दी। इस प्रस्ताव में कई ढांचागत बदलावों का वादा किया गया था; इनमें संघीय मंत्रालयों का आकार छोटा करना, आर्थिक रूप से बोझ बन रहे बोर्डों और समितियों का विलय करना, तथा सरकारी कर्मचारियों और शिक्षकों को राजनीति के प्रभाव से मुक्त करना शामिल था।

राजस्थान रॉयल्स ने सनराइजर्स हैदराबाद को हराया, अब क्वालीफायर-2 में गुजरात टाइटंस से भिड़ंत

एजेंसी मुल्लांपुर

आईपीएल 2026 के एलिमिनेटर मुकाबले में राजस्थान रॉयल्स ने सनराइजर्स हैदराबाद को रौंदकर टूर्नामेंट से बाहर कर दिया है। मुल्लांपुर के Maharaja Yadavindra Singh International Cricket Stadium, New Chandigarh में पहले बैटिंग करते हुए राजस्थान ने वैभव सूर्यवंशी के धमाकेदार 97 रनों की पारी के दम पर 8 विकेट पर 243 रन बनाए। वैभव क्रिस गेल का सबसे तेज आईपीएल शतक का रिकॉर्ड तोड़ने ही वाले थे कि प्रफुल हिंगे की गेंद पर एस. रविचंद्रन को कैच थमा बैठे। खैर, 244 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी हैदराबाद की टीम ने खराब शुरुआत की, जबकि अभिषेक शर्मा बिना खाता खोले आउट हो गए। ट्रेविस हेड भी 17 रन पर चलते बने। इसके बाद कुछ अच्छी पारी जरूर देखने को मिली, लेकिन यह हैदराबाद को जीत दिलाने के लिए काफी नहीं थी। पूरी टीम 19.2 ओवरों में सभी विकेट खोकर 196 रन बनाकर आउट हो गई। इस तरह से राजस्थान ने 47 रनों से जीत दर्ज की। अब टूर्नामेंट का क्वालीफायर-2 मुकाबला राजस्थान रॉयल्स और क्वालीफायर-1 की हारी हुई टीम गुजरात टाइटंस के बीच 29 मई को इसी मैदान पर खेला जाएगा। विनिंग टीम फाइनल बेंगलुरु के साथ भिड़ेगी।

Sunrisers Hyderabad की शुरुआत बेहद खराब रही, जब अभिषेक शर्मा बिना खाता खोले ही जोफ्रा आर्चर का शिकार बन गए। इसके बाद ट्रेविस हेड और ईशान किशन ने तूफानी अंदाज में रन बटोरे। किशन ने सिर्फ 11 गेंदों पर 33 रन बनाए, जिसमें 3 चौके और 3 छक्के शामिल रहे। वहीं हेड ने 8 गेंदों में 17 रन की तेज पारी खेली। हालांकि, लगातार विकेट गिरने से टीम दबाव में आ गई। एस. रविचंद्रन केवल 1 रन बना सके, जबकि हेनरिक क्लासेन ने 10 गेंदों पर 18 रन जोड़े। पावरप्ले में सनराइजर्स ने 71 रन बनाए, लेकिन नियमित अंतराल पर विकेट गिरने से टीम बड़ी साझेदारी नहीं बना सकी। इसके बाद नीतीश कुमार रेड्डी और सलील अरोरा ने पारी को संभाला। दोनों के बीच तेज साझेदारी हुई, जिसने टीम को मजबूत स्थिति में पहुंचाया।

नीतीश रेड्डी ने 20 गेंदों में 38 रन की विस्फोटक पारी खेली, जिसमें 3 चौके और 2 छक्के शामिल थे। इससे पहले वैभव सूर्यवंशी और ध्रुव जुरेल के तूफानी अर्धशतक से राजस्थान रॉयल्स ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ आठ विकेट पर 243 रन बनाए। सूर्यवंशी ने 29 गेंद में 12 छक्कों और पांच चौकों से 97 रन की पारी खेली जबकि जुरेल ने 21 गेंद में पांच चौकों और तीन छक्कों की मदद से 50 रन बनाए। सूर्यवंशी ने यशस्वी जायसवाल (29) के साथ पहले विकेट के लिए सिर्फ आठ ओवर में 125 रन जोड़कर रॉयल्स को ताबड़तोड़ शुरुआत दिलाई। सनराइजर्स की ओर से प्रफुल्ल हिंगे सबसे सफल गेंदबाज रहे जिन्होंने 54 रन देकर तीन विकेट चटकाए। कप्तान पैट कमिंस ने चार ओवर में 64 जबकि साकिब हुसैन ने चार ओवर में 52 रन लुटाए।

भारत के प्रज्ञानंदा को मिली हार, अजीरेजा ने दर्ज की लगातार दूसरी जीत

एजेंसी नई दिल्ली

फ्रांस के अलीरेजा फिरोजा नॉर्वे शतरंज टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रज्ञानानंदा को हराकर अंक तालिका में अकेले शीर्ष पर पहुंच गए हैं, जबकि विश्व चैंपियन डी. गुकेश वेस्ली सो से आर्मगेडन टाईब्रेकर में हार गए। फिरोजा की यह लगातार दूसरी बड़ी जीत है, इससे पहले उन्होंने मैग्नस कार्लसन को हराया था। नॉर्वे शतरंज 2026 टूर्नामेंट में फ्रांस के ग्रैंडमास्टर अलीरेजा फिरोजा शानदार फॉर्म में नजर आ रहे हैं। मैग्नस कार्लसन को पहले दौर में हराने के बाद उन्होंने दूसरे दौर में भारत के युवा ग्रैंडमास्टर प्रज्ञानानंदा रमेशबाबू को क्लासिकल मुकाबले में मात देकर लगातार दूसरी जीत दर्ज की है। इस जीत के साथ फिरोजा अब 6 में से पूरे 6 अंक लेकर अंक तालिका में अकेले शीर्ष पर पहुंच गए हैं।

ओस्लो में खेले जा रहे इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में अलीरेजा फिरोजा ने लगातार दूसरे दिन सफेद मोहरों से खेलते हुए

अपने मौके का पूरा फायदा उठाया। बता दें कि पहले दौर में उन्होंने दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन को हराया था। अब प्रज्ञानानंदा के खिलाफ जीत ने उन्हें टूर्नामेंट का सबसे मजबूत दावेदार बना दिया है।

मौजूद जानकारी के अनुसार इस जीत के बाद फिरोजा ने लाइव रेटिंग में भी बड़ी छलांग लगाई है। उन्होंने करीब 10.7 रेटिंग अंक हासिल किए हैं और एक बार फिर दुनिया के शीर्ष 10 खिलाड़ियों में वापसी कर ली है। गौरतलब है कि रोमानिया में खेले गए सुपर शतरंज क्लासिक टूर्नामेंट में उन्हें चोट लगी थी, जिससे उनकी रेटिंग में गिरावट आई थी। प्रज्ञानानंदा के खिलाफ मुकाबले में निर्णायक मोड़ तब आया जब भारतीय खिलाड़ी ने रानी की अदला-बदली का फैसला किया। शुरुआती चरण में प्रज्ञानानंदा के पास हल्की बढ़त मानी जा रही थी, लेकिन एंडगेम में फिरोजा ने बेहद सटीक चालों से दबाव बनाया और धीरे-धीरे मुकाबला अपने पक्ष में कर लिया। अंत में उन्होंने निर्णायक बढ़त हासिल करते हुए पूरा मुकाबला जीत लिया। दूसरी ओर मैग्नस कार्लसन और जर्मनी के विन्सेंट कीमर के बीच क्लासिकल मुकाबला ड्रॉ रहा। हालांकि आर्मगेडन टाईब्रेकर में कार्लसन ने सफेद मोहरों से जीत दर्ज कर 1.5 अंक हासिल किए। मैच के दौरान कार्लसन ने खुद स्वीकार किया कि उन्होंने कई आसान मौके गंवा दिए और अपने खेल से निराश थे।

एशियन गेम्स के पहले राजा रणधीर सिंह अब नहीं रहे, खेल जगत में शोक

एजेंसी नई दिल्ली

भारत के दिग्गज निशानेबाज और पांच ओलंपिक में देश का प्रतिनिधित्व कर चुके राजा रणधीर सिंह का लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया। अर्जुन पुरस्कार विजेता रणधीर सिंह ने खेल प्रशासन में भी अमूल्य योगदान दिया, जिसमें अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के सदस्य के रूप में उनका कार्यकाल शामिल है।

भारतीय खेल जगत से बुधवार को एक बेहद दुखद खबर सामने आई। देश के वरिष्ठ खेल प्रशासक और पूर्व निशानेबाज राजा रणधीर सिंह का 79 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। मौजूद जानकारी के अनुसार वह पिछले कुछ समय से उम्र संबंधी स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे थे और कई दिनों से अस्पताल में भर्ती थे। बाद में उन्होंने अपने आवास पर अंतिम सांस ली। राजा रणधीर सिंह भारतीय खेल प्रशासन और निशानेबाजी की दुनिया का एक बड़ा नाम माने जाते थे। उन्होंने खिलाड़ी के रूप में देश का नाम रोशन करने के साथ-साथ खेल प्रशासन में भी लंबा और प्रभावशाली योगदान दिया। बता दें कि हाल ही में उन्होंने स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए एशियाई ओलंपिक परिषद के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया था। उन्हें वर्ष 2024 में इस पद के लिए चुना गया था। उनके निधन की जानकारी भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ के सचिव राजीव भाटिया ने दी। उन्होंने गहरा दुख जताते हुए कहा कि राजा रणधीर सिंह ने भारतीय और अंतरराष्ट्रीय खेल जगत को नई दिशा देने में अहम भूमिका निभाई थी।

गौरतलब है कि राजा रणधीर सिंह ने 1978 बैंकॉक एशियाई खेलों में ट्रैप स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा था। वह एशियाई खेलों में स्वर्ण जीतने वाले भारत के पहले निशानेबाज बने थे। इसके अलावा उन्होंने अपने लंबे करियर में पांच ओलंपिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व भी किया था।

खेलों में शानदार योगदान के लिए उन्हें अर्जुन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। सक्रिय खेल जीवन से संन्यास लेने के बाद उन्होंने खेल प्रशासन में कदम रखा और धीरे-धीरे भारत के सबसे प्रभावशाली खेल अधिकारियों में शामिल हो गए थे।

उन्होंने भारतीय ओलंपिक संघ में महासचिव के रूप में काम किया और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के सदस्य भी रहे। खेलों के विकास और खिलाड़ियों के हितों के लिए उनके प्रयासों को हमेशा याद किया जाएगा। राजीव भाटिया ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि राजा रणधीर सिंह एक सम्मानित ओलंपियन, अर्जुन पुरस्कार विजेता और भारत ही नहीं बल्कि एशिया तथा अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक जगत के प्रमुख खेल प्रशासकों में शामिल थे।

फीफा से पहले नेमार की चोट पर ब्राजील को चिंता! नेमार बोले क्या समस्या है ?

एजेंसी नई दिल्ली

नेमार आगामी फीफा विश्व कप से पहले अपनी पिंडली की चोट को हल्के में ले रहे हैं, जबकि ब्राजील की मेडिकल टीम उनकी दाहिनी पिंडली में महत्वपूर्ण सूजन और लंबी रिकवरी की उम्मीद कर रही है। इससे उनके अभ्यास मैचों से बाहर होने की संभावना है, जो ब्राजील के छठे विश्व कप खिताब जीतने के अभियान के लिए एक बड़ी चिंता का विषय है, खासकर कोच एंसेलोटी के फिटनेस पर जोर देने के बाद। ब्राज़ील के फॉरवर्ड नेमार को उम्मीद नहीं है कि उनकी पिंडली की चोट आगामी फीफा विश्व कप में उनके खेलने पर असर डालेगी। 34 वर्षीय स्ट्राइकर दाहिनी पिंडली में चोट के कारण सैंटोस के पिछले तीन मैच न खेल पाने के बावजूद राष्ट्रीय टीम में शामिल होंगे। विला बेल्मिरो में कोपा सुदामेरिकाना में सैंटोस की डेपोर्टिवो कुएनका पर 3-0 की जीत देखते हुए, नेमार ने अपनी चोट के बारे में चिंताओं को दूर करते हुए ईएसपीएन से कहा कि यह यहीं है, बिल्कुल ठीक है। 17 मई को कोरितिबा के खिलाफ

सैंटोस की 3-0 से हार के दौरान नेमार को पिंडली में चोट लगी थी। जब उनसे विश्व कप में उनके प्रदर्शन पर इसके संभावित प्रभाव के बारे में पूछा गया, तो नेमार ने जवाब दिया कि क्या समस्या है? हालांकि नेमार आशावादी हैं, ब्राजील की चिकित्सा टीम सावधानी बरत रही है और उनकी स्थिति के अनुरूप एक रिकवरी योजना तैयार की है। सूत्रों ने ईएसपीएन को बताया कि नेमार की दाहिनी पिंडली में सूजन काफी अधिक है और ठीक होने में काफी समय लगेगा, संभवतः सैंटोस द्वारा शुरू में बताई गई अवधि से भी अधिक। इसलिए, यह संभावना कम है कि नेमार 31 मई को पनामा और 5 जून को मिस्र के खिलाफ ब्राजील के अभ्यास मैचों के लिए उपलब्ध होंगे। ब्राज़ील 13 जून को मोरक्को के खिलाफ़ अपने रिकॉर्ड छठे फीफा विश्व कप खिताब के अभियान की शुरुआत करेगा। 79 गोलों के साथ देश के सर्वकालिक अग्रणी गोल स्कोरर नेमार, अक्टूबर 2023 में एंटीरियर क्रूसिएट लिगामेंट में चोट लगने के बाद से राष्ट्रीय टीम के लिए नहीं खेले हैं। उन्हें टूर्नामेंट के लिए 26 सदस्यीय टीम में शामिल किया गया है, जिसकी सह-मेजबानी संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको करेंगे। यह उनका चौथा विश्व कप होगा, और उनका लक्ष्य अपना पहला फीफा विश्व कप खिताब जीतना है। ब्राज़ील 2014 में चौथे स्थान पर रहा था और उसके बाद के दो टूर्नामेंटों में क्वार्टर फाइनल से बाहर हो गया था।

व्यापार

670% का बंपर उछाल, EV का इंश्योरेंस कराने में भारतीयों ने तोड़ दिए सारे रिकॉर्ड, यह राज्य सबसे आगे

एजेंसी नई दिल्ली

भारत का मोटर इंश्योरेंस मार्केट अब बड़े महानगरों से निकलकर देश के छोटे शहरों और कस्बों में तेजी से पैर पसार रहा है। ऑनलाइन इंश्योरेंस प्लेटफॉर्म पॉलिसीबाजार (Policybazaar) की 'मोटर इंश्योरेंस ट्रेंड्स रिपोर्ट FY26' के अनुसार, देश के टियर-2 और टियर-3 शहरों ने वाहन सुरक्षा बीमा के मामले में महानगरों को पीछे छोड़ दिया है।

रिपोर्ट का सबसे बड़ा और चौंकाने वाला आंकड़ा इलेक्ट्रिक व्हीकल्स (EVs) से जुड़ा है। साल 2025 की तुलना में 2026 में ईवी इंश्योरेंस पॉलिसी में 670% की रिकॉर्ड बढ़ोतरी दर्ज की गई है, जिससे यह देश के मोटर इंश्योरेंस मार्केट में सबसे तेजी से बढ़ने वाला प्रोडक्ट बन गया है।

छोटे शहर निकले आगे रिपोर्ट के आंकड़े बताते हैं कि अब गाड़ी का बीमा कराने की जागरूकता केवल दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और हैदराबाद जैसे बड़े शहरों तक सीमित नहीं रह गई है। छोटे शहरों में भी इंश्योरेंस की संख्या में तेजी देखी गई। गैर-महानगरीय (नॉन-मेट्रो) भारत में कार इंश्योरेंस अपनाने की दर में 15% की सालाना (YoY) ग्रोथ देखी गई, जबकि मेट्रो शहरों में

यह आंकड़ा केवल 8% रहा।

देश के कुल कार इंश्योरेंस मार्केट में अब अकेले टियर-2 और टियर-3 शहरों का योगदान बढ़कर 77% हो गया है, जो पिछले साल 75% था। छोटे शहरों में इंटरनेट की बढ़ती पहुंच, ऑनलाइन पॉलिसी रिन्यू कराना आसान होना और क्लेम के फायदों को लेकर बढ़ती जागरूकता इसकी मुख्य वजह है।

भारत का मोटर इंश्योरेंस मार्केट अब अधिक मैच्योर और जागरूक चरण में प्रवेश कर रहा है। सबसे मजबूत रफ्तार अब नॉन-मेट्रो भारत, ईवी-केंद्रित इंश्योरेंस और कस्टमाइज्ड ऐड-ऑन कवर्स से मिल रही है। जैसे-जैसे गाड़ियों की पहुंच टियर-2 और टियर-3 शहरों में गहरी हो रही है।

पारस पसरीचा, हेड, मोटर इंश्योरेंस, पॉलिसीबाजार

ईवी इंश्योरेंस में महाराष्ट्र टॉप पर

ईवी इंश्योरेंस अपनाने में महाराष्ट्र देश का अग्रणी राज्य बनकर उभरा है, जिसमें मुंबई और पुणे मुख्य ग्रोथ हब रहे।

देश की कुल बीमित ईवी कारों में 8% हिस्सेदारी अकेले महाराष्ट्र की है। वहीं कारों के कुल इंश्योरेंस के मामले में तेलंगाना सबसे आगे रहा, जिसने 30% की शानदार सालाना ग्रोथ दर्ज की।

किस ईंधन की गाड़ियों का सबसे ज्यादा बीमा?

भले ही ईवी तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन कुल बीमा बाजार में इसकी हिस्सेदारी अभी 1% है। बाजार पर अभी भी पेट्रोल गाड़ियों का दबदबा है।

पेट्रोल वाहन: 68.3%
डीजल वाहन: 24.7%
सीएनजी वाहन: 5.8%

देश में पेट्रोल-डीजल की कमी नहीं, सरकार ने किया क्लियर, बताया क्यों बढ़ रही पेट्रोल पंपों पर भीड़

एजेंसी नई दिल्ली

पश्चिम एशिया संकट और अंतरराष्ट्रीय बाजार में मंदी के बीच भारत सरकार ने साफ कर दिया है कि देश में पेट्रोल और डीजल की कोई कमी नहीं है। सरकार ने स्पष्ट किया है कि भारत की रिफाइनिंग क्षमता घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक है। हालांकि, कुछ औद्योगिक उपभोक्ताओं द्वारा खुदरा ईंधन चैनलों के दुरुपयोग और जमाखोरी के कारण किल्लत जैसी स्थिति दिखाई दे रही है, जिस पर सरकार ने सख्त रुख अपनाया है। केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी लगातार सरकारी तेल कंपनियों (OMCs), राज्य सरकारों और उद्योग निकायों के साथ संपर्क में हैं। स्थिति की समीक्षा के लिए आज बुधवार को पेट्रोलियम सचिव ने राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों, फिक्की और सीआईआई के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक भी की है। सरकार ने देश के नागरिकों से अपील की है कि वे किसी भी तरह की अफवाहों पर ध्यान न दें। देश

की ऊर्जा सुरक्षा पूरी तरह मजबूत है और सरकार हर परिस्थिति पर चौबीसों घंटे 'वॉर-रूम' के जरिए नजर रख रही है। भारत 22 परिचालन रिफाइनरियों के साथ 258.1 मिलियन टन प्रति वर्ष की स्थापित क्षमता के साथ दुनिया का चौथा सबसे बड़ा रिफाइनर है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में देश की कुल घरेलू खपत 243.2 मिलियन टन थी, जो हमारी कुल क्षमता से कम है।

भारत ने इसी वर्ष 61.5 मिलियन टन पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात किया है, जो इसे दुनिया के सबसे बड़े निर्यातकों में से एक बनाता है। सरकारी कंपनियां उठा रहीं भारी नुकसान पश्चिम एशिया में जारी तनाव के बीच आम नागरिकों, किसानों और वाहन चालकों को वैश्विक महंगाई से बचाने के लिए सरकार ने एक बड़ा नीतिगत फैसला लिया है। सरकार के निर्देश पर सार्वजनिक क्षेत्र की तेल कंपनियां (जैसे IOC, BPCL, HPCL) अंतरराष्ट्रीय बाजार की बढ़ी हुई कीमतों का बोझ खुदरा उपभोक्ताओं पर नहीं डाल रही हैं। इस वजह से सरकारी तेल कंपनियों को वर्तमान में पेट्रोल, डीजल और घरेलू एलपीजी की बिक्री पर करीब 550 करोड़ रुपये प्रति दिन का भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है।

सरकार ने बताया कि तेल की कोई कमी नहीं है, बल्कि कुछ जगहों पर आर्बिट्रेज (कीमतों के अंतर का फायदा उठाना) के कारण समस्या आ रही है। सरकार की नीति के अनुसार, सब्सिडी वाला सस्ता ईंधन केवल खुदरा उपभोक्ताओं के लिए है। औद्योगिक खरीदारों को अंतरराष्ट्रीय दरों पर ही तेल खरीदना होता है। लेकिन कुछ औद्योगिक उपभोक्ता फायदा कमाने के लिए अपने कमर्शियल चैनल को छोड़कर आम जनता वाले पेट्रोल पंपों से थोक में डीजल-पेट्रोल खरीद रहे हैं।

अडानी का हाथ लगते ही अपर सर्किट पर पहुंचा जेपी पावर का शेयर, 5 दिनों में 25% से अधिक की तेजी

एजेंसी नई दिल्ली

जयप्रकाश पावर वेंचर्स (JP Power) के शेयरों में बुधवार को भारी लिवाली देखने को मिली। बीएसई पर कंपनी का शेयर 20% के अपर सर्किट (Upper Circuit) के साथ 22.96 रुपये तक पहुंच गया। दिन के अंत में यह 19.54% की तेजी के साथ 22.88 रुपये पर बंद हुआ। इस तेजी के साथ जेपी पावर के शेयरों ने लगातार पांचवें सत्र में अपनी बढ़त जारी रखी है और पिछले पांच दिनों में इसमें 25% से अधिक का उछाल आया है। बुधवार के कारोबारी सत्र में ट्रेडिंग वॉल्यूम भी काफी हाई रहा। शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, करीब 1,904 करोड़ रुपये मूल्य के 87 करोड़ से अधिक शेयरों का लेनदेन हुआ। इस बंपर तेजी के पीछे अडानी ग्रुप के साथ हुई एक बड़ी महाडील है। पिछले हफ्ते अडानी पावर (Adani Power) ने जानकारी दी थी कि उसने कर्ज में डूबी जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड (JAL) के लिए NCLT द्वारा मंजूर रेजॉलूशन प्लान के तहत जयप्रकाश पावर वेंचर्स लिमिटेड (JPVL) में 24% हिस्सेदारी खरीदने के लिए अंतिम समझौतों पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। अडानी पावर इस 24% हिस्सेदारी को खरीदने के लिए 2,993.6 करोड़ रुपये का भुगतान करेगी। हिस्सेदारी के अलावा, दोनों कंपनियों के बीच एक बिजनेस ट्रांसफर एग्रीमेंट (BTA) भी हुआ है। अडानी पावर उत्तर प्रदेश के सोनभद्र में स्थित 180 मेगावाट (MW) क्षमता वाले चुर्क थर्मल पावर प्लांट और उससे जुड़ी संपत्तियों का अधिग्रहण करेगी। इसमें प्रयागराज पावर जेनरेशन कंपनी लिमिटेड में जेपी एसोसिएट्स की 11.49% हिस्सेदारी भी शामिल है। इस पूरे थर्मल एसेट सौदे की कीमत 1,200 करोड़ रुपये तय की गई है। यह पूरा अधिग्रहण नकद लेनदेन के जरिए होगा, जिसे NCLT की मंजूरी (17 मार्च 2026) के बाद 90 दिनों के भीतर पूरा कर लिया जाएगा। बिजली क्षेत्र के शेयरों में यह तेजी सिर्फ इस डील की वजह से नहीं है, बल्कि देश में चल रही भीषण गर्मी भी इसका एक बड़ा कारण है। इस साल अत्यधिक मजबूत 'एल नीनो' प्रभाव के कारण देश के बड़े हिस्से में गंभीर हीटवेव की स्थिति बनी हुई है। इसके चलते देश भर में बिजली की मांग रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई है, जिससे पावर कंपनियों के शेयरों को जबरदस्त बूस्ट मिला है।

सपने में बजरंगबली ने दिए हैं दर्शन तो तुरंत कर लें ये काम, खुशियों से भर जाएगी आपकी झोली

स्वप्न शास्त्र के अनुसार, कोई भी सपना यूं ही नहीं आता है। सपने देखना ज्योतिष ग्रहों और आने वाले जीवन में होने वाली घटनाओं से संबंधित होते हैं। अक्सर हम जिस बारे में ज्यादा सोचते हैं उसी से जुड़े सपने हमें दिखाई देते हैं। वहीं, कुछ सपने हमें असल जीवन से जुड़े संकेत देते हैं। ऐसे में अगर आपको बजरंगबली ने स्वयं सपने में आकर दर्शन दिए हैं, तो ऐसे में कुछ कार्य जरूर कर लेने चाहिए। हालांकि, इससे पहले इस बात पर ध्यान जरूर दें कि भगवान हनुमान आपको किस रूप में और किस मुद्रा में दिखाई दिए हैं। स्वप्न से जुड़े संकेत जानने के लिए ये बातें बहुत अधिक मायने रखती हैं। आइए ज्योतिष एक्सपर्ट डॉ. मधु प्रिया से विस्तार से जानें की सपने में बजरंगबली को देखने का क्या मतलब होता है और ऐसा सपना आने पर क्या करना चाहिए।

ज्योतिष एक्सपर्ट डॉ. मधु प्रिया के अनुसार, अगर किसी जातक को सपने में हनुमान जी नजर आए हों तो इसे बेहद शुभ संकेत माना जाता है। इसका अर्थ होता है कि आपके लिए कहीं न कहीं ऐसी स्थिति बन सकती हैं जहां आपको साहस के साथ आगे बढ़ना होगा और हिम्मत रखनी होगी। साथ ही, इसका मतलब होता है कि आपका मंगल भी कहीं न कहीं बलवान हो रहा है। हनुमानजी को सपने में देखना जातक के आत्मविश्वास में वृद्धि का भी संकेत होता है।

हनुमान जी को प्रसन्न रूप में देखना अगर आपको सपने में भगवान हनुमान प्रसन्न होते हुए नजर आते हैं, तो यह आपके लिए बहुत ही शुभ संकेत हो सकता है। मान्यता है कि सपने में बजरंगबली को प्रसन्न देखने का अर्थ होता है कि आपके जीवन में सकारात्मक बदलाव आ सकते हैं। अच्छे मन के साथ अच्छी मुद्रा में बजरंगबली को देखते हैं तो यह प्रॉपर्टी के लिए भी अच्छा संकेत होता है क्योंकि, हनुमानजी को मंगल के देवता भी माना गया है। ऐसे में मंगल से संबंधित चीजों भाई-बहन, परिवार, प्रॉपर्टी आदि के लिए इस सपने को शुभ माना जाता है।

हनुमानजी को क्रोधित मुद्रा में देखना मान्यता है कि हनुमानजी अगर सपने में क्रोधित मुद्रा में आएं, तो यह स्वप्न प्रॉपर्टी से जुड़े विवाद के संकेत दे सकता है। ऐसे में अधिक सजग होना चाहिए क्योंकि, परिवार में होने वाले किसी विवाद का संकेत या आत्मविश्वास में कमी का संकेत भी माना जाता है। साथ ही, ऐसा सपना आने पर जातक को स्वास्थ्य से जुड़ी समस्या होने की भी आशंका जताई जाती है। इसलिए अगर सपने में क्रोधित मुद्रा में हनुमानजी आएं तो सुबह उठकर विधि-विधान से उनकी पूजा जरूर करनी चाहिए।

हनुमान जी का मंदिर बार-बार देखना यदि आपको सपने में हनुमान जी का मंदिर या खुद को हनुमानजी की पूजा करते हुए देखने का सपना बार-बार आता है, तो इसका अर्थ हो सकता है कि आपके ग्रह कुछ संकेत दे रहे हों। यह स्वप्न अपने कर्मों और कर्तव्यों को और भी अधिक अच्छा बनाने का संकेत माना जाता है। साथ ही, अगर आपका आत्मविश्वास कम हुआ है तो उसे और भी अधिक बढ़ाएं। यह स्वप्न बताता है कि भगवान का आशीर्वाद आपके साथ बना हुआ है।

बार-बार हनुमानजी का स्वप्न देखने पर करें ये काम ज्योतिष एक्सपर्ट डॉ. मधु प्रिया जी बताती हैं कि अगर बार-बार सपने में हनुमानजी दिखाई दें, तो ऐसे में हनुमानजी की विधि-विधान से पूजा करनी चाहिए। साथ ही, बजरंगबली को प्रसाद चढ़ाना चाहिए और रोज उनके मंदिर जाना भी शुरू कर दें। लगातार 40 दिनों तक हनुमानजी के मंदिर जाना बेहद शुभ माना जाता है। अगर ऐसा संभव न हो तो हर मंगलवार के दिन हनुमानजी के मंदिर जाकर उन्हें लड्डू का भोग लगाना चाहिए।

हनुमानजी क्रोधित मुद्रा में दिखें तो करें यह उपाय अगर आपको सपने में हनुमानजी क्रोधित मुद्रा में दिखाई दें तो ऐसे में उपाय अवश्य कर लेना चाहिए। इसके लिए मंगलवार के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नानादि करने के बाद चमेली के तेल और लाल सिंदूर से हनुमानजी का अभिषेक जरूर करना चाहिए। इस उपाय को करने से जातक की सारी बाधाएं दूर होती हैं और भगवान हनुमान की कृपा जातक पर बनी रहती है।

12 साल बाद बृहस्पति का महागोचर, इन राशियों के जातकों की चमकेगी किस्मत, होगा करियर प्रोग्रेस

ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों का गोचर करना विशेष महत्वपूर्ण माना जाता है। देवगुरु बृहस्पति करीब 12 साल बाद कर्क राशि में 2 जून को गोचर करने जा रहे हैं। बृहस्पति देव देर रात 2 बजकर 25 मिनट पर कर्क राशि में प्रवेश करेंगे। यह गोचर ज्योतिषीय दृष्टि बेहद ही महत्वपूर्ण माना जा रहा है। कर्क राशि में गुरु ग्रह 31 अक्तूबर तक विराजमान रहेंगे। इस दौरान कई राशियों की बल्ले-बल्ले होगी। करियर प्रोग्रेस, नई नौकरी मिलने के चांस, आय वृद्धि होना या आर्थिक स्थिरता बनीं रहेगी। आइए आपको बताते हैं कौन हैं ये लकी राशियां जिन्हें खूब पैसा मिलेगा और तरक्की होगी।

मेष राशि गुरु ग्रह का कर्क राशि में गोचर करने से मेष राशि के जातकों को खूब लाभ प्राप्त होगा। इस समय आपको माता लक्ष्मी की कृपा से धन मिलेगा, आय बढ़ेगी और संपत्ति बढ़ने के प्रबल योग देखने को मिलेंगे। जीवन में चल रही आर्थिक स्थिरता में बदलाव देखने को मिलेगा और भौतिक सुख-सुविधाओं का लाभ मिलेगा। काफी लंबे समय से आप प्रॉपर्टी खरीदने का प्लान बना रहे हैं, तो यह समय काफी उचित है। नौकरी में सफलता प्राप्त होगी और आपके सभी कार्य संपन्न होंगे।

कर्क राशि में गुरु का गोचर होने वाला है, तो इस राशि के जातकों को भी काफी लाभ प्राप्त होने जा रहा है। यह समय काफी सकारात्मक रहेगा। नए नौकरी मिलने के चांस ज्यादा है और बेरोजगार लोगों को कोई गुड़ न्यूज मिल सकती है। आय में वृद्धि होने के चांस सबसे ज्यादा है और आर्थिक स्थिति पहले से और अच्छी हो जाएगी। प्रॉपर्टी खरीदने का विचार कर रहे हैं, यह कार्य आपका सफल होगा।

सिंह राशि के जातकों को भी काफी लाभ प्राप्त होने वाला है। जो लोग लंबे समय से रोजगार की तलाश में जुटे हुए हैं, उन्हें इस दौरान अच्छे अवसर प्राप्त हो सकते हैं, हालांकि काम के सिलसिले में अपने घर या शहर से दूर जाना पड़ सकता है। विदेशी कंपनियों, आयात-निर्यात के कार्यों या अंतरराष्ट्रीय संपर्कों से जुड़े लोगों को विशेष लाभ मिलने की संभावना है। करियर और व्यवसाय के क्षेत्र में यह समय नई संभावनाएं लेकर आ सकता है। यदि आप समझदारी के साथ सही मौके का चयन करते हुए लगातार मेहनत करते रहेंगे, तो सफलता आपके कदम चूम सकती है।

तुला राशि गुरु के कर्क राशि में गोचर करने से तुला राशि के जातकों को काफी फायदा होने वाला है। आपको बेहतर नौकरी का प्रस्ताव मिल सकता है। बेहतरीन वेतन या पद में वृद्धि होने की संभावना है। आर्थिक रुप से आप मजबूत बनेंगे और आय में वृद्धि होगी। निर्णय लेने की क्षमता में सुधार आएगा और आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

वृश्चिक राशि वालों के लिए गुरु का यह गोचर मान-सम्मान, सफलता और आर्थिक उन्नति लेकर आने वाला साबित हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्यस्थल पर नई जिम्मेदारियां और बेहतर अवसर मिल सकते हैं, वहीं व्यापार में भी लाभ की स्थिति मजबूत रहेगी। आमदनी के नए स्रोत बनने से आर्थिक स्थिति में स्थिरता आएगी और बचत बढ़ने के संकेत हैं। आपकी कार्यशैली और नेतृत्व क्षमता से लोग प्रभावित होंगे, जिससे सामाजिक और पेशेवर दोनों क्षेत्रों में आपकी पहचान मजबूत होगी। परिवार के सदस्यों का पूरा सहयोग मिलेगा और इस दौरान लिए गए फैसले आगे चलकर आपके लिए फायदेमंद साबित हो सकते हैं।

मीन राशि जातकों के लिए यह समय काफी फायदेमंद रहने वाला है। इस दौरान मान-सम्मान बढ़ेगा और करियर में उन्नति मिलेगी। अगर आप मेहनत और लगन से काम करेंगे, तो आपको सफलता प्राप्त होगी। आर्थिक स्थिति पहले से अच्छी होगी और आय में वृद्धि होने के चांस है। यह समय आपके लिए अपार सफलता के लिए बस आपक आलस करने से बचें।

नौतपा के बीच आ गई मानसून की भविष्यवाणी,पाएंगे गर्मी से राहत, जानें कब होगी आपके शहर में बरसात

मेदिनी ज्योतिष के 'वर्षा विज्ञानं' खंड में अलग-अलग राशियों और ग्रहों को शुष्क (सूखे) या आर्द्र (गीले या जल वाले) की संज्ञा दी गयी है, जिसके आधार पर किसी भी मौसम में तापमान के बढ़ने या कम होने का और बारिश के विषय में भविष्य कथन किया जाता है। अग्नि तत्व की राशियों मेष, सिंह और धनु को शुष्क राशि और गर्मी देने वाली माना जाता है। मंगल, केतु और सूर्य तेज गर्मी देने वाले ग्रह हैं, तो वही शनि और राहु भी शुष्क किन्तु वायु वेग(आंधी-तूफान) से सम्बंधित हैं। गुरु और शुक्र बड़े सुहावने मौसम और वर्षा को देने वाले हैं तो वही बुध और चन्द्रमा भी अच्छी वर्षा और तापमान में कमी ले कर आते हैं। इस वर्ष अग्नि तत्व के ग्रह मंगल अपनी अग्नि तत्व की राशि मेष में 11 मई से लेकर 20 जून तक गोचर करेंगे। गर्मियों के इन दिनों में मंगल के मेष राशि में होने और सूर्य के अब 25 मई से लेकर 4 जून तक रोहिणी नक्षत्र में नोतपा या कुछ स्थानों पर दशतपा के दिनों में तेज गर्मी पड़ने की आशंका जताई जा रही है। पंचांग के अनुराशि इस वर्ष चंद्र मास की गणना (देसी महीने) में ज्येष्ठ के महीने में अधिक मास पड़ने से दो ज्येष्ठ होकर 2 मई से लेकर 29 जून तक इसका प्रभाव रहेगा।

मेदिनी ज्योतिष के नियमों के अनुराशि इस वर्ष की ग्रह स्थिति और सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र प्रवेश की कुंडली आगामी मानसून को लेकर बड़े दिलचस्प संकेत दे रही है। मेदिनी ज्योतिष में कर्क, वृश्चिक, मकर और मीन को जल तत्व की राशि माना जाता है, तो वही मेष, सिंह धनु, मिथुन और कन्या शुष्क राशि हैं। वर्तमान में उत्तर, पश्चिम और मध्य भारत में पड़ रही रिकॉर्ड तोड़ गर्मी से कुछ राहत गुरु के गोचर में शुष्क राशि मिथुन को छोड़कर 1 जून की रात्रि को जल तत्व की कर्क राशि में प्रवेश के बाद से मिलने लगेगी। गुरु के कर्क राशि में आने से पूर्व 28 मई को दक्षिण भारत के तटीय प्रदेश केरलम में वर्षा हो सकती है। जब गोचर में गुरु और शुक्र मिथुन राशि में उस समय तुला में चल रहे चन्द्रमा से त्रिकोण में होंगे।

कर्क राशि में गुरु 2 जून से अपना प्रभाव दिखते हुए वर्तमान में मीन राशि में चल रहे शनि को अपनी नवम दृष्टि से देखे कर उत्तर भारत और मध्य भारत में कुछ स्थानों पर हलकी वर्षा से जून के पहले पखवाड़े में गर्मी से कुछ राहत दे सकते हैं। दक्षिण भारत और मध्य भारत में मानसून 2 जून के बाद से तेज रफ़्तार से आगे बढ़ सकता है। 8 जून को कर्क राशि में शुक्र भी गुरु से आ मिलेंगे और गोचर में इन दोनों शुभ ग्रहों की युति के चलते 8 जून के बाद मुंबई, रायपुर, नागपुर,और कोलकता में अच्छी वर्षा होगी। सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र प्रवेश कुंडली में हैं सामान्य मानसून वर्षा के योग प्रतिवर्ष सूर्य गोचर में मिथुन राशि में आर्द्रा नक्षत्र में 21 या 22 जून के दिन आते हैं,और उस समय विशेष की कुंडली से 4 महीनों (जून से सितंबर) में होने वाली मानसून की वर्षा का एक सामान्य आकलन किया जाता है। इस वर्ष सूर्य 22 जून को दोपहर 12 बजकर 26 मिनट पर भारतीय समयानुराशि जब आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे तो कन्या लग्न उदय हो रहा होगा। लग्न में जलीय ग्रह चंद्रमा विराजमान होंगे किन्तु लग्न की राशि शुष्क है और शनि की इस पर सातवीं दृष्टि पड़ रही है जिसके चलते सामान्य वर्षा होने के बावजूद कुछ स्थानों पर सूखे जैसे स्थिति पैदा हो सकती है। इस वर्ष मानसून के चार महीनों में जून से सितंबर के बीच शुष्क ग्रह मंगल सूर्य से पीछे चलेंगे जो वर्षा के लिए अच्छा योग है। शनि और गुरु जल तत्व की राशियों में गोचर करेंगे जिससे वर्षा 95 से 100 प्रतिशत के बीच हो सकती है। लेकिन गुरु के अतिचार (तेज़ गति) से गोचर करने और 26 जुलाई को शनि के वक्री होने के चलते अगस्त और सितंबर में कुछ असामान्य वर्षा होगी। दिल्ली-एनसीआर में 31 मई की आषाढ़ पूर्णिमा के दिन मानसून पहुंच सकता है। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में 22 जून के बाद से मानसून की अच्छी वर्षा होगी। बाढ़ के साथ अनावृष्टि का भी बनेगा योग 16 जुलाई से 15 अगस्त के बीच कर्क राशि में गुरु और सूर्य की युति से देश के कई हिस्सों में बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है। मध्य भारत में छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और ओडिशा में भी इस वर्ष जुलाई मध्य से अगस्त मध्य के बीच अधिक वर्षा के योग हैं। लेकिन 22 अगस्त से 17 सितंबर के बीच शुष्क राशियों में ग्रहों के आने के चलते सामान्य से कुछ कम वर्षा हो सकती है विशेषकर पूर्वीभारत में जैसे बंगाल, बिहार, झारखण्ड और असम में इस समय कम वर्षा होगी। दक्षिण भारत में इस साल जून और जुलाई में अच्छी वर्षा होगी बाद में कन्या राशि की पीड़ा से अगस्त और सितंबर में कर्नाटक और तमिलनाडु में कुछ कम वर्षा हो सकती है।

आज का राशिफलः मेष, मिथुन और सिंह को करियर में मिलेंगे अच्छे अवसर

मेष राशि वृषभ राशि और आपके दूसरे भाव (धन और वाणी का क्षेत्र) में सूर्यदेव और बुधदेव की उपस्थिति वित्तीय योजना और व्यावहारिक निर्णय लेने में आपकी मदद करेगी। इस समय आपका पूरा ध्यान बचत और पारिवारिक खर्चों पर रहेगा। ग्यारहवें भाव में राहु बैठे हैं, जो आपको पेशेवर संपर्कों या सामाजिक दायरे के माध्यम से अच्छा लाभ करा सकते हैं। भावुकता में आकर खर्च करने या जोखिम भरे निवेश से पूरी तरह दूर रहें। साझेदारी से जुड़े वित्तीय मामलों को भी आज बहुत सावधानी से संभालने की आवश्यकता है।

वृषभ राशि मिथुन राशि और आपके दूसरे भाव (धन क्षेत्र) में बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव विराजमान हैं, जो आपकी आर्थिक स्थिरता और स्मार्ट प्लानिंग को मजबूत सहारा देंगे। दसवें भाव में राहु की स्थिति करियर में उन्नति या नए पेशेवर अवसरों के माध्यम से अच्छा लाभ दिला सकती है। हालांकि, बारहवें भाव में मंगलदेव की उपस्थिति के कारण आपके अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं। आज जल्दबाजी में आकर कहीं भी पैसा खर्च करने से बचें। सोच-समझकर लिए गए आर्थिक निर्णय ही आपके जीवन में स्थिरता लाएंगे।

मिथुन राशि ग्यारहवें भाव (लाभ का क्षेत्र) में मंगलदेव की उपस्थिति नेटवर्किंग और पेशेवर संपर्कों के माध्यम से धन लाभ के अच्छे संकेत दे रही है। आपकी अपनी राशि में बृहस्पतिदेव बैठे हैं, जो आपके आत्मविश्वास को बढ़ाएंगे और आर्थिक योजनाओं में तरक्की के अवसर देंगे। हालांकि, वृषभ राशि और बारहवें भाव (व्यय का क्षेत्र) में सूर्यदेव और बुधदेव की युति आपको फालतू के खर्चों पर नियंत्रण रखने की सलाह देती है। आज के दिन किसी भी तरह के जोखिम भरे निवेश और भावुकता में किए जाने वाले खर्चों से बचें।

कर्क राशि वृषभ राशि और आपके ग्यारहवें भाव (लाभ का क्षेत्र) में सूर्यदेव और बुधदेव की युति बनी हुई है, जो पेशेवर संपर्कों और नेटवर्किंग के जरिए आपको अच्छा आर्थिक लाभ करा सकती है। कुंभ राशि और आपके आठवें भाव में राहु बैठे हैं, जो यह संकेत देते हैं कि आपको पैसों से जुड़ा कोई भी जोखिम भरा फैसला लेने से बचना चाहिए। मिथुन राशि और बारहवें भाव में बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव की उपस्थिति सुख-सुविधाओं या पारिवारिक मामलों पर आपका खर्च बढ़ा सकती है। सही बजट बनाकर चलने से आर्थिक स्थिरता बनी रहेगी।

सिंह राशि मिथुन राशि और आपके ग्यारहवें भाव (लाभ का क्षेत्र) में बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव की

मौजूदगी बनी हुई है, जो नेटवर्किंग और पेशेवर संपर्कों के माध्यम से अच्छे धन लाभ का संकेत दे रही है। दसवें भाव में सूर्यदेव और बुधदेव की उपस्थिति करियर में तरक्की से जुड़े नए और बेहतरीन अवसर ला सकती है। आठवें भाव में शनिदेव बैठे हैं, इसलिए आज के दिन किसी भी प्रकार के जोखिम भरे निवेश से पूरी तरह दूर रहें। व्यावहारिक योजना बनाकर चलने से आपका वित्तीय संतुलन ठीक रहेगा।

कन्या राशि आज चंद्रदेव आपके दूसरे भाव (धन का क्षेत्र) में गोचर कर रहे हैं, जिससे आपका पूरा ध्यान बचत बढ़ाने और आर्थिक स्थिरता हासिल करने पर रहेगा। दसवें भाव में बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव की युति पेशेवर प्रयासों और करियर के माध्यम से अच्छे लाभ के संकेत दे रही है। छठे भाव में राहु की उपस्थिति आपको वित्तीय कंपटीशन या पुराने रुके हुए मामलों से बाहर निकालने में मदद करेगी। आठवें भाव में मंगलदेव के होने से आज आपको जोखिम भरे निवेश या जल्दबाजी में खर्च करने से बचना चाहिए। व्यावहारिक वित्तीय योजना बनाना आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

तुला राशि आठवें भाव में सूर्यदेव और बुधदेव की उपस्थिति संकेत दे रही है कि आज का दिन वित्तीय योजना और व्यावहारिक निर्णय लेने के लिए बहुत अच्छा है। आपका ध्यान मुख्य रूप से निवेश, बचत या पुराने रुके हुए पैसों से जुड़े मामलों को सुलझाने पर रहेगा। नौवें भाव में बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव की मौजूदगी यात्रा से जुड़े अवसरों के माध्यम से आपको लाभ दिला सकती है। किसी भी तरह के जोखिम भरे निवेश और भावुकता में आकर किए जाने वाले खर्चों से बचें। सावधानीपूर्वक की गई प्लानिंग ही आपकी वित्तीय स्थिरता बनाए रखेगी।

वृश्चिक राशि आठवें भाव में बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव की उपस्थिति यह संकेत देती है कि आज आपको संयुक्त धन, निवेश या पुराने अटके हुए वित्तीय मामलों को बहुत सावधानी से संभालने की जरूरत है। बारहवें भाव (व्यय का क्षेत्र) में चंद्रदेव का गोचर आपकी सुख-सुविधाओं और भावनात्मक जरूरतों पर खर्चों को बढ़ा सकता है। आज किसी भी तरह के रिस्की इनवेस्टमेंट और फालतू के खर्चों से पूरी तरह दूर रहें। व्यावहारिक योजना और खर्चों पर नियंत्रण रखने से ही आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत बनी रहेगी।

धनु राशि ग्यारहवें भाव (लाभ का क्षेत्र) में चंद्रदेव का गोचर नेटवर्किंग या टीम वर्क के माध्यम से आपको अच्छा धन लाभ और नए अवसर दिला सकता है। छठे भाव में सूर्यदेव और बुधदेव की उपस्थिति पैसों से जुड़े व्यावहारिक निर्णय लेने और काम के सिलसिले में स्थिरता लाने में मददगार होगी। आज आपको भावुकता में आकर पैसे खर्च करने या किसी भी तरह के जोखिम भरे निवेश से बचना चाहिए। सोच-समझकर बनाई गई योजना और धैर्य आपके दीर्घकालिक आर्थिक विकास में बहुत मदद करेंगे।

मकर राशि दूसरे भाव (धन का क्षेत्र) में राहु की उपस्थिति आपके ध्यान को पूरी तरह से पैसों और भौतिक स्थिरता पर केंद्रित रखेगी। छठे भाव में बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव बैठे हैं, जो निरंतर प्रयासों के माध्यम से आपके आर्थिक विकास का समर्थन कर रहे हैं। आज पैसों के मामले में जल्दबाजी में कोई भी बड़ा फैसला लेने या अनावश्यक खर्चों से आपको बचना चाहिए। व्यावहारिक रूप से बनाई गई योजना और अनुशासित तरीके से किया गया खर्च ही आपकी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाए रखेगा।

कुंभ राशि दूसरे भाव (धन का क्षेत्र) में शनिवेद विराजमान हैं, जो आपको पैसों के मामलों में अनुशासन और वित्तीय स्थिरता बनाए रखने की प्रेरणा देंगे। नौवें भाव (भाग्य का क्षेत्र) में चंद्रदेव का गोचर लंबी अवधि की वित्तीय योजनाएं बनाने और समझदारी भरे निर्णय लेने में आपका पूरा सहयोग करेगा। आज जल्दबाजी में आकर कहीं भी पैसा खर्च न करें और न ही कोई जोखिम भरा निवेश करें। आपकी व्यावहारिक सोच और धैर्य ही आपकी आर्थिक स्थिति में सही संतुलन बनाए रखने में मदद करेगी।

मीन राशि आठवें भाव में चंद्रदेव का गोचर होने से आपका पूरा ध्यान वित्तीय सुरक्षा, बचत और संयुक्त संसाधनों के सही मैनेजमेंट पर रहने वाला है। दूसरे भाव (धन क्षेत्र) में मंगलदेव बैठे हैं, जो यह संकेत देते हैं कि आपको जल्दबाजी या गुस्से में आकर कहीं भी पैसा खर्च करने से बचना चाहिए। इस दौरान पैसों को लेकर किसी के साथ आपकी बहस भी हो सकती है, इसलिए संयम रखें। वृषभ राशि में सूर्यदेव और बुधदेव की उपस्थिति व्यावहारिक योजना बनाने में आपकी मदद करेगी। सोच-समझकर लिए गए निर्णय आज आपकी आर्थिक स्थिति को स्थिर बनाएंगे।

बढ़ती जा रही है आर्थिक तंगी ? इन 5 वास्तु दोषों से घर में रुक जाती है बरकत

वास्तु शास्त्र में घर में रख-रखाव के तमाम नियमों के बारे में बताया गया है। घर में गलत दिशा में सामान रखने या फिर साफ-सफाई का ध्यान न रखने पर वास्तु दोष हो सकता है। जिससे घर में दरिद्रता आती है। इसके अलावा वास्तु शास्त्र में अन्य कई ऐसे कारण भी बताए गए हैं, जोकि दरिद्रता की वजह बनते हैं। वहीं वास्तु में घर में सुख-समृद्धि, शांति और सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखने के लिए कुछ सरल उपायों के बारे में भी बताया गया है। वास्तु के अनुसार दरिद्रता के कारण वास्तु शास्त्र में उत्तर दिशा को धन की दिशा मानी गई है। इसलिए यहां पर भारी सामान जैसे- भारी बक्सा, कूड़ादान, फर्नीचर या फिर शौचालय आदि होने से धन का प्रवाह रुक जाता है। घर के दक्षिण-पश्चिम दिशा में तालाब, बोरिंग या गड्ढा आदि होने से आर्थिक नुकसान व बीमारियां होने की संभावना रहती है। अगर घर का मुख्य दरवाजा टूटा है, गंदा है, तो भी घर में मां लक्ष्मी का प्रवेश नहीं होता है। वास्तु में काले रंग का दरवाजा या मुख्य द्वार पर अंधेरा होना भी दरिद्रता की वजह बनती है। वास्तु शास्त्र के मुताबिक अगर दक्षिण-पश्चिम दिशा में रसोई है, तो इससे बरकत रुक सकती है। वहीं रात

को किचन में गंदे बर्तन छोड़ना भी दरिद्रता को बुलावा है। घर के मुख्य द्वार पर जूते-चप्पल बिखरे होने से भी आपको वास्तु दोष का सामना करना पड़ सकता है। घर की दीवारों में दरारें, सीलन या फिर लंबे समय से बंद पड़ी घड़ियां भी घर में निगेटिव एनर्जी को बढ़ाती है। करें ये उपाय बता दें कि घर जितना साफ-सुथरा और व्यवस्थित होगा, उतना ही अधिक सकारात्मक ऊर्जा का फ्लो घर में बना रहेगा। इसके साथ ही घर की उत्तर-पूर्व दिशा यानी की ईशान कोण को हमेशा साफ-सुथरा और हल्का रखना चाहिए। घर की दक्षिण-पश्चिम दिशा को अन्य दिशाओं की तुलना में हमेशा ऊंचा रखना चाहिए। पॉजिटिव एनर्जी के प्रवाह को बनाए रखने के लिए नियमित रूप से घर में सुबह-शाम पूजा करनी चाहिए और कपूर जलाएं। घर में पॉजिटिव एनर्जी का प्रवाह बढ़ाने के लिए घर में तुलसी का पौधा लगाना चाहिए। घर में पोंछा लगाने के दौरान पानी में थोड़ा सा साधारण नमक डालें। फिर इस पानी से पोंछा लगाएं। ऐसा करने से निगेटिव एनर्जी से राहत मिलेगी। वास्तु शास्त्र के मुताबिक घर में पर्याप्त प्राकृतिक रोशनी और ताजी हवा आनी चाहिए। इससे भी पॉजिटिविटी बढ़ती है।

कलेक्टर का दौरा थमा तो सूख गए नल!, सुखाढाना में जल जीवन फिर बना इंतजार की कहानी

चार दिन बहा पानी,फिर लौट आया संकट, ग्रामीण बोले साहब गए तो व्यवस्था भी चली गई

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

क्षेत्र की ग्राम पंचायत सुखाढाना में नल-जल योजना एक बार फिर सवालों के घेरे में आ गई है। ग्रामीणों का कहना है कि जब तक बैतूल कलेक्टर डॉ.सौरभ संजय सोनवणे का ग्रामीण दौरा और मॉनिटरिंग जारी रही,तब तक गांव में बंद पड़े नल अचानक पानी उगलने लगे।लेकिन जैसे ही कलेक्टर कार्यालयीन कार्यों में व्यस्त हुए,वैसे ही योजना की हकीकत फिर सामने आ गई और गुरुवार को सुबह से शाम तक लोगों को पानी की एक बूंद तक नसीब नहीं हुई।

ग्रामीणों के अनुसार 23 मई से गांव में नल-जल योजना के तहत दिन में दो से तीन बार पानी सप्लाई किया जा रहा था।इससे लोगों को उम्मीद जगी थी कि वर्षों से चला आ रहा जल संकट अब खत्म होने वाला है।लेकिन बुधवार को केवल टेस्टिंग के नाम पर दो-चार बाल्टी पानी मिला और गुरुवार को पूरा गांव फिर सूखे नलों को ताकता रह गया।भीषण नौतपा और 44 डिग्री के आसपास पहुंचते तापमान ने हालात और भयावह कर दिए हैं।गांव के कई निजी ट्यूबवेल फरवरी के अंतिम सप्ताह से ही जवाब दे चुके हैं।ऐसे में आर्थिक रूप से सक्षम परिवार तो टैंकरों के सहारे किसी तरह अपनी जरूरत पूरी कर रहे हैं, लेकिन गरीब और मध्यम वर्गीय ग्रामीण पूरी तरह नल-जल योजना पर निर्भर हैं।ग्रामीणों का आरोप है कि योजना केवल कागजों में संचालित दिखाई जा रही है, जबकि जमीनी हकीकत कुछ और ही बयां कर रही है।गांव में चर्चा का विषय बन चुका है कि कलेक्टर साहब का दौरा बंद होते ही पंचायत ने भी अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया।अब ग्राम पंचायत सुखाढाना के ग्रामीण सामूहिक रूप से प्रशासन को पत्र लिखकर नल-जल योजना को नियमित और सुचारु रूप से संचालित करने की मांग करने की तैयारी कर रहे हैं।उनका कहना है कि नौतपा की तपती गर्मी में पानी की समस्या केवल असुविधा नहीं,बल्कि जीवन से जुड़ा गंभीर संकट बन चुकी है। ग्रामीणों की मांग नल-जल योजना की नियमित मॉनिटरिंग हो,प्रतिदिन तय समय पर पानी सप्लाई दी जाए,खराब पड़ी व्यवस्थाओं का तत्काल सुधार हो,जल संकट वाले गांवों में विशेष नियंत्रण कक्ष बनाया जाए

सुखाढाना के ग्रामीणों को अब इंतजार केवल पानी का नहीं,बल्कि उस व्यवस्था का है जो बिना अधिकारियों की मौजूदगी के भी ईमानदारी से काम कर सके।

सारनी की चिमनियों से उठ रहा अरबों का धुआं, लेकिन स्थानीय युवाओं के चूल्हों में अब भी सन्नाटा

जनप्रतिनिधियों के भाषणों में `स्थानीय रोजगार धरातल पर बाहरी मजदूरों का राज, डिप्लोमा और आईटीआई युवाओं के सपनों की खुलेआम हत्या

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

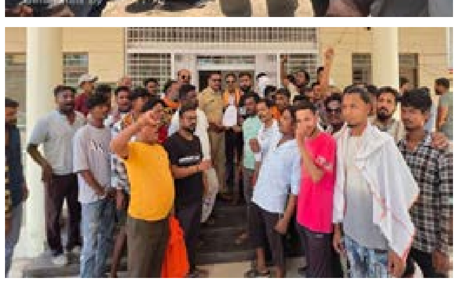

कभी प्रदेश की ऊर्जा राजधानी कहलाने वाली विद्युत नगरी सारनी आज अपने ही युवाओं की कराहती उम्मीदों की कब्रगाह बनती जा रही है।लगभग 11 हजार 678 करोड़ रुपए की विशाल परियोजना और 660 मेगावाट नवीन विद्युत इकाई निर्माण कार्य के बीच स्थानीय युवाओं के सपनों को इस बेरहमी से रौंदा जा रहा है मानो उनकी योग्यता और परिश्रम की कोई कीमत ही न हो।विडंबना देखिए

जिस धरती ने वर्षों तक प्रदेश को रोशन करने वाली बिजली पैदा की उसी धरती के शिक्षित युवाओं के घर आज बेरोजगारी के अंधेरे में डूबे हुए हैं।जिन हाथों ने आईटीआई और डिप्लोमा की डिग्रियां लेकर मशीनों के बीच अपने भविष्य की तस्वीरें गढ़ी थीं,वे हाथ आज रोजगार कार्यालयों और ठेकेदारों के दरवाजों पर अपमान का बोझ ढो रहे हैं।

सारनी की मिट्टी में जन्मे युवाओं को उनके ही शहर में पराया बना दिया गया है। बाहरी कंपनियां उत्तरप्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल से मजदूरों की फौज लाकर काम करा रही हैं,जबकि स्थानीय तकनीकी शिक्षित युवाओं को योजनाबद्ध तरीके से हाशिए पर धकेला जा रहा है। यह केवल रोजगार की अनदेखी नहीं, बल्कि स्थानीय प्रतिभा, आत्मसम्मान और क्षेत्रीय अस्मिता का सार्वजनिक चीरहरण है।बुधवार को आक्रोशित युवाओं ने जिला कलेक्टर के नाम संबोधित ज्ञापन मुख्य अभियंता एवं सारनी थाना प्रभारी को सौंपते हुए मांग की कि निर्माणाधीन इकाई में कम से कम 70 प्रतिशत रोजगार स्थानीय युवाओं को दिया जाए। युवाओं ने दो टूक शब्दों में चेतावनी दी कि यदि स्थानीय डिप्लोमा और आईटीआई धारकों को प्राथमिकता नहीं दी गई,तो बाहरी मजदूरों के माध्यम से चल रहे कार्यों को शांतिपूर्ण लेकिन निर्णायक आंदोलन के जरिए बंद कराया जाएगा। ज्ञापन में उल्लेख किया गया कि सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारनी में पिछले दो महीनों से 660 मेगावाट इकाई निर्माण कार्य जारी है,लेकिन स्थानीय युवाओं की योग्यता को कूड़ेदान में फेंककर बाहरी मजदूरों को रोजगार दिया जा रहा है।इससे क्षेत्र में बेरोजगारी के साथ-साथ आक्रोश ज्वालामुखी की तरह फूटने लगा है।सबसे बड़ा सवाल उन जनप्रतिनिधियों पर खड़ा हो रहा है,जो चुनावी मंचों से स्थानीय युवाओं को प्राथमिकता का ढोल पीटते नहीं थकते।कुछ दिन पहले स्थानीय विधायक ने भी कंपनी प्रबंधन और ठेकेदारों की बैठक में शासन की मंशानुसार 70 प्रतिशत स्थान और 30 प्रतिशत बाहर के अनुपात में स्थानीय रोजगार देने का आश्वासन दिया था, लेकिन आज वह आश्वासन भी चिमनियों से निकलते धुएं की तरह हवा में उड़ता दिखाई दे रहा है।मध्यप्रदेश शासन के श्रम मंत्रालय द्वारा औद्योगिक परियोजनाओं में स्थानीय लोगों को प्राथमिकता देने के स्पष्ट निर्देश हैं, लेकिन सारनी में इन आदेशों की ऐसी दुर्गति हुई है मानो शासन के नियम केवल फाइलों में सजाने के लिए बनाए गए हों। प्रशासनिक अमला और प्रबंधन की चुप्पी अब युवाओं के जख्मों पर नमक छिड़कने का काम कर रही है।स्थिति तब और भयावह हो जाती है जब बाहरी राज्यों से लाए गए मजदूरों का चरित्र सत्यापन तक नहीं कराया जा रहा। युवाओं का कहना है कि यह लापरवाही आने वाले समय में सामाजिक और आपराधिक घटनाओं को जन्म दे सकती है,लेकिन जिम्मेदार कुर्सियों पर बैठे लोग मानो सब कुछ देखकर भी आंखें मूंदे हुए हैं।आज सारनी का युवा व्यवस्था से पूछ रहा है।क्या अरबों की परियोजनाएं सिर्फ बाहरी लोगों की रोजी-रोटी के लिए हैं।क्या स्थानीय युवाओं की डिग्रियां सिर्फ दीवारों पर टांगने के लिए हैं,क्या जनप्रतिनिधियों के वादे केवल चुनावी मंचों की तालियों तक सीमित हैं। यदि शीघ्र ही स्थानीय योग्य युवाओं को रोजगार में प्राथमिकता नहीं दी गई,तो आने वाले दिनों में सारनी की सड़कों पर युवाओं का आक्रोश जनांदोलन बनकर फूट सकता है। तब करोड़ों की यह परियोजना और प्रशासनिक दावे दोनों कठघरे में खड़े नजर आएंगे।

बकरीद पर अमन,भाईचारे और सौहार्द का संदेश

शोभापुर, पाथाखेड़ा और सारनी में अलग-अलग समय पर अदा होगीईद-उल-अजहा की नमाज,शांति समिति की बैठक में प्रशासन ने दिए जरूरी निर्देश

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

ईद-उल-अजहा (बकरीद) पर्व को शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न कराने के उद्देश्य से बुधवार को सारनी थाना परिसर में शांति समिति की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई।बैठक में प्रशासनिक अधिकारियों,पुलिस विभाग, नगर पालिका प्रतिनिधियों एवं अंजुमन कमेटी के पदाधिकारियों सहित गणमान्य नागरिकों ने भाग लेकर आपसी भाईचारे और सामाजिक समरसता का संदेश दिया।बैठक में एसडीओपी प्रियंका करचाम ने नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि कुर्बानी निर्धारित एवं सुरक्षित स्थानों पर ही की जाए तथा स्वच्छता और कानून व्यवस्था का विशेष ध्यान रखा जाए।उन्होंने कहा कि त्योहार आपसी प्रेम,सद्भाव और सामाजिक एकता का प्रतीक हैं,इसलिए सभी लोग प्रशासन का सहयोग करें।

इस अवसर पर नायब तहसीलदार संतोष पथोंरिया, सारनी थाना प्रभारी जयपाल इवनाती,चौकी प्रभारी मनोज उईके,नगर पालिका उपयंत्री रविंद्र वराठे सहित अंजुमन कमेटी अध्यक्ष अब्दुल रहमान खान,शमशेर आलम, मोहम्मद इलियास,हारून भाई,मुनीर भाई,पंचू खान एवं अकरम खान सहित अन्य नागरिक उपस्थित रहे।

बैठक के बाद प्रशासनिक अधिकारियों ने ईद की नमाज को लेकर विभिन्न स्थानों की व्यवस्थाओं का निरीक्षण भी किया।अंजुमन कमेटी जामा मस्जिद के सचिव अब्दुल रहमान खान ने बताया कि ईद-उल-अजहा त्याग, समर्पण और इंसानियत का पर्व है। उन्होंने हजरत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की कुर्बानी की परंपरा का उल्लेख करते हुए कहा कि यह पर्व इंसान को खुदा की राह में त्याग और मानव सेवा की प्रेरणा देता है।

नमाज का समय

शोभापुर — सुबह 8 बजे

पाथाखेड़ा — सुबह 7:45 बजे

सारनी जामा मस्जिद — सुबह 8:30 बजे

प्रशासन एवं मुस्लिम समाज के प्रतिनिधियों ने नागरिकों से अपील की है कि वे पर्व को प्रेम,शांति और भाईचारे के साथ मनाते हुए क्षेत्र की गंगा-जमुनी तहजीब को मजबूत करें।

एक अरब की जल योजना फेल! : चार दिनों से सूखे पड़े 13 हजार नल,सारनी नगर पालिका और लक्ष्मी इंजीनियरिंग कंपनी की लापरवाही से जनता बेहाल

मेंटेनेंस के नाम पर जल संकट गहराया,36 वार्डों में हाहाकार जहां पार्षद ने दबाव बनाया वहां पहुंचे टैंकर,बाकी जनता बूंद-बूंद पानी को तरसी

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

करोड़ों रुपए खर्च कर बनाई गई जल आवर्धन योजना अब नगर पालिका परिषद सारनी और योजना संचालित करने वाली लक्ष्मी इंजीनियरिंग कंपनी की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर रही है। लगभग एक अरब 8 करोड़ रुपए की लागत से शुरू की गई इस महत्वाकांक्षी योजना का उद्देश्य नगर के प्रत्येक घर तक नियमित पेयजल पहुंचाना था,लेकिन आज स्थिति यह है कि 13 हजार से अधिक नल कनेक्शनधारी पिछले चार दिनों से पानी के लिए परेशान घूम रहे हैं।भीषण गर्मी के दौर में पानी जैसी मूलभूत आवश्यकता बंद होने से नागरिकों का आक्रोश अब खुलकर सामने आने लगा है।नगर के कई वार्डों के रहवासियों ने आरोप लगाया कि जल आवर्धन योजना को मेंटेनेंस के नाम पर अचानक बंद कर दिया गया,लेकिन न तो नगर पालिका परिषद सारनी ने जनता को पहले कोई सूचना दी और न ही वैकल्पिक जल व्यवस्था सुनिश्चित की गई। हालत यह है कि जिन वार्डों के पार्षद या स्थानीय जनप्रतिनिधि नगर पालिका कार्यालय पहुंचकर हंगामा कर रहे हैं,उन्हीं क्षेत्रों में टैंकर भेजे जा रहे हैं,जबकि बाकी वार्डों की जनता भगवान भरोसे छोड़ दी गई है।

जानकारी के अनुसार सारनी के लगभग 13 वार्डों में पिछले चार दिनों से नियमित पानी आपूर्ति ठप पड़ी हुई है। पाथाखेड़ा,शोभापुर और बगडोना क्षेत्र में भी जल संकट की स्थिति लगातार बनी हुई है।नागरिकों का कहना है कि नगर पालिका और लक्ष्मी इंजीनियरिंग कंपनी के बीच समन्वय की भारी कमी दिखाई दे रही है। बिना पूर्व सूचना और बिना वैकल्पिक व्यवस्था के चार-चार दिनों तक पानी बंद रखना सीधे तौर पर जनता के

अधिकारों के साथ खिलवाड़ माना जा रहा है। डॉ.राधाकृष्णन वार्ड निवासी बबलू अतुलकर ने बताया कि चार दिनों के लंबे इंतजार के बाद भी बुधवार को पानी की आपूर्ति सुचारु रूप से शुरू नहीं हो सकी।उन्होंने कहा कि भीषण गर्मी में मध्यमवर्गीय परिवार तक पानी के लिए परेशान हैं,तो झुग्गी बस्तियों में रहने वाले गरीब परिवारों की स्थिति कितनी भयावह होगी,इसका सहज अंदाजा लगाया जा सकता है।कई परिवारों को निजी टैंकरों से महंगे दामों पर पानी खरीदने को मजबूर होना पड़ रहा है।सबसे बड़ा सवाल यह खड़ा हो रहा है कि जब करोड़ों रुपए खर्च कर जल आवर्धन योजना लागू की गई थी,तब क्या ऐसी आपातकालीन परिस्थितियों के लिए कोई बैकअप व्यवस्था नहीं बनाई गई। नगर पालिका परिषद सारनी आखिर जनता को यह जवाब क्यों नहीं दे पा रही कि मेंटेनेंस कार्य कब शुरू हुआ,कितने दिनों तक चलेगा और वैकल्पिक जल व्यवस्था क्यों नहीं की गई। दूसरी ओर कांग्रेस के पदाधिकारी और कार्यकर्ता भी इस मुद्दे को लेकर आक्रामक हो गए हैं।कांग्रेस नेताओं का आरोप है कि नगर पालिका परिषद जानबूझकर जल आपूर्ति में व्यवधान उत्पन्न कर रही है ताकि लोगों पर 2300 की वसूली का दबाव बनाया जा सके। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द जल व्यवस्था सामान्य नहीं हुई तो जिला मुख्यालय बैतूल की तर्ज पर सारनी नगर पालिका परिषद के खिलाफ भी बड़ा आंदोलन किया जाएगा। नगर पालिका प्रांगण में मटका फोड़ प्रदर्शन और जनआक्रोश रैली आयोजित करने की तैयारी शुरू हो चुकी है।जनता का कहना है कि करोड़ों रुपए की योजनाएं केवल कागजों में सफल दिखाई जा रही हैं, जबकि धरातल पर लोग पानी जैसी बुनियादी सुविधा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। अब देखना यह होगा कि नगर पालिका परिषद सारनी और लक्ष्मी इंजीनियरिंग कंपनी जनता के इस गुस्से को गंभीरता से लेते हैं या फिर मेंटेनेंस के नाम पर जिम्मेदारियों से बचने का प्रयास जारी रहेगा।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949